

वर्ष: 17 | अंक : 4 | अप्रैल 2026 | मूल्य: ₹ 10 /=-

हंसलोक संदेश



परमाराध्या माता श्री राजेश्वरी देवी जी
आपकी जयंती 6 अप्रैल पर शत-शत नमन!

भारतीय संस्कृति, अध्यात्म व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका



हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-17, अंक-4
अप्रैल, 2026
चैत्र-वैशाख, 2083 वि.स.
प्रकाशन की तारीख
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महारौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल
एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह

मूल्य-एक प्रति-रु.10/-

पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:

कार्यालय: हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,
B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,
छतरपुर, नई दिल्ली-110074

मो. नं. : 8800291788, 8800291288

Email: hansloksandesh@gmail.com

Website: www.hanslok.org

Subject to Delhi Jurisdiction

RNI No. DELHIN/2010/32010

संपादकीय

आदिशक्ति मां पराम्बा

आदिशक्ति महादेवी दुर्गा सनातन, निराकार, परब्रह्म हैं, जिन्हें ब्रह्मांड से भी परे एक सर्वोच्च शक्ति के रूप में माना जाता है। यह शक्ति मूर्त रूप में निर्गुण है, परन्तु निराकार परमेश्वर को जब सृष्टि की रचना करनी होती है, तो वे इच्छा रूप में ब्रह्मांड की रचना, जननी रूप में संसार का पालन और क्रिया रूप में पूरे ब्रह्मांड को गति तथा बल प्रदान करते हैं। आदिशक्ति को पराम्बा और पराशक्ति कहकर भी संबोधित किया जाता है। शाक्त संप्रदाय में ब्रह्म-शक्ति के रूप में पूजा जाता है, जिसमें दो कुल हैं- काली कुल और श्री कुल। वैष्णव संप्रदाय के अनुसार भगवती श्री महालक्ष्मी और उनके अवतार जैसे राधा, सीता, रुक्मिणी अन्य आदि पराशक्ति हैं, जबकि शैव संप्रदाय माता पार्वती अथवा शाकम्भरी को ही आदि शक्ति का सगुण स्वरूप मानते हैं। सिख पंथ के अनुसार माता चंडी अकाल पुरख की ऊर्जा शक्ति है। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार देवी आदि शक्ति ही मूल है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश सृष्टि का सृजन, पालन और संहार, इन्हीं आदिशक्ति मां भगवती की सहायता से करते हैं। सकाम भक्त इनके सेवन से मनोभिलाषित सराहनीय स्थिति प्राप्त कर लेते हैं। निष्काम भक्त परम दुर्लभ मोक्ष को पाकर कृतार्थ होते हैं। ब्रह्मा के साथ सरस्वती, विष्णु के साथ महालक्ष्मी और रुद्र के साथ महाकाली का नाम शक्ति रूप में जुड़ा है। मां सर्वत्र विजय भव का आशीर्वाद देकर श्रद्धालुओं को कृतार्थ करती हैं। माँ पार्वती, माँ लक्ष्मी और माँ सरस्वती आदि शक्ति की संगिनी हैं, जो त्रिमूर्ति की सहेलियां हैं।

वह असीम शक्ति, जो संसार को प्रकाशित करती है। वह ऊर्जा, जो इस संसार के प्रत्येक प्राणी के सुख का कारण है। वह शक्ति, जो हमें हर प्रकार की बुराई से बचाती है और हमें सुखी, फलदायी और समृद्ध जीवन जीने में सहायता करती है, यह वही आदि पराशक्ति है। आदि पराशक्ति शब्द का अर्थ है “प्रथम सर्वोच्च ऊर्जा”। वे महादेवी हैं और वे अंबिका हैं। वे ब्रह्मांड धारणी हैं। वे अनीश्वर हैं, वे वह शक्ति हैं, जिसका वर्णन करने में शेष-महेश-शारदा असमर्थ हैं। इसलिए भक्त सहसा ही कह उठते हैं- हे माँ! आप समस्त जीवों की प्राण हैं; आप बुद्धि, लक्ष्मी, शोभा, क्षमा, शांति, श्रद्धा, मेधा, धैर्य और स्मृति हैं। हे माता! आप तीनों लोकों की दयालु माता हैं; आप समस्त लोकों को लाभ पहुँचाने वाली पूजनीय और शुभ विद्या हैं; और आप ही कुशलता से बीज मंत्रों में निवास करती हैं। ऐसी ही पराशक्ति से परिपूर्ण था- जगत जननी माताश्री राजेश्वरी देवी जी का व्यक्तित्व। हम सभी प्रेमीभक्त करुणामयी माताश्री राजेश्वरी देवी जी का पुनीत स्मरण करते हुए उनकी जयंती 6 अप्रैल पर उनके श्रीचरणों में कोटिशः नमन करते हैं! वे सदैव हमारे अनुकूल रहें, हमें सद्बुद्धि, शक्ति और अपनी निष्काम भक्ति प्रदान कर कृतार्थ करें! ■

श्री माता जी का प्यार दुलार!

याद कर रहा यह संसार!!

उत्तराखण्ड के मध्य में स्थित पौड़ी जिला में स्थित है- मेलगाँव। यही वह पवित्र गाँव है, जहाँ एक

दिव्य कन्या ने जन्म लिया, जो अपने जीवन काल में देश-विदेश में जगत जननी माताश्री राजेश्वरी देवी जी के नाम से विख्यात हुई। इनका जन्म 6 अप्रैल, 1932 को मध्यान्ह चैत्र नवरात्र में हुआ, जब सारे भारत देश में भगवती की पूजा-वंदना बड़े श्रद्धा-भाव से होती है। मेलगाँव में भी भगवती की पूजा-वंदना बड़े श्रद्धाभाव से चल रही थी। नन्हें-मुन्नें बालक-बालिकाएं मिल-जुल कर देवी का अनुष्ठान का खेल खेल रहे थे। जिस बालिका को उन्होंने

दैवीय वस्त्र पहनाकर सजाया था, उसके मुखमंडल से अलौकिक प्रकाश झलक रहा था, मानो उसके रूप में देवी का प्राकट्य हो रहा हो और उधर यह दिव्य कन्या जन्म ले रही थी। स्वयं भगवती ही इस दिव्य कन्या के रूप में संसार के कल्याण के लिए अवतरित हो रही थीं।

हिमालय क्षेत्र शिव और शक्ति का क्रीड़ा-स्थल है। प्रकृति की छटा यहाँ पर निराली है। इस क्षेत्र में श्रीमाँ का

आविर्भाव ऊषा देवी के आविर्भाव के समान ही सिद्ध हुआ; जो घर-घर में सूर्य की किरणों को फैलाती हुई जगत के



अंधकार को मिटा देती है। इस दिव्य कन्या को शिशु रूप में माँ-बाप 'राजुली' कहकर पुकारते थे। आपकी माँ कहती थीं कि राजुली का जन्म हमारे घर में हमारे इष्टदेव निरंकार और भगवती का वरदान है। वे घर में विलक्षण दिखाई देती थीं, अनूठी थीं और देवी-सी लगती थीं। इनकी माँ कहा करती थीं कि मैं सदैव इनके रूप को छिपाने के लिए इनके माथे पर काजल का टीका लगाती थी, ताकि इनको नजर न लग जाये। गाँव की स्त्रियाँ उन्हें

मातृ शक्ति दिवस 06 अप्रैल पर विशेष

कहा करती थीं कि “चन्द्रादेवी!

तेरी यह पुत्री इतनी सुन्दर और लुभावनी लगती है कि इसको गोद में उठाने और चूमने को दिल करता है। देख तो सही, यह सोने की तरह दमकती है और वैरागन-सी लगती है। कहीं यह कृष्ण की राधा तो नहीं है, जो तेरे घर में जन्म लेकर आ गयी हो। यह साधारण कन्या नहीं है, तेरे और बेटे-बेटियों से हर प्रकार अलग लगती है।” तो वह मजाक से कहती थीं कि “अरी! मेरी राजुली को नजर मत

लगाओ।”

श्रीमाँ का जन्म सूर्यवंशी परिवार में हुआ। इनकी माता श्रीमती चन्द्रादेवी तथा पिता श्री गोपाल सिंह नेगी पवित्रात्मा, उच्च आदर्श वाले एवं अपने इष्टदेव निरंकार एवं भगवती के प्रति बड़ी आस्था रखते थे। आपके माता-पिता ने सदैव सात्विक एवं सादा जीवन व्यतीत किया। आपके पूज्य पिता बड़े ही सरल हृदय के थे, चौथी अवस्था में शास्त्र के नियमानुसार, आपकी ही प्रेरणा से उन्होंने संन्यास धारण कर आत्मज्ञान के प्रचार में अपने जीवन को समर्पित किया। श्रीमाँ का व्यक्तित्व और कृतित्व महान था। उनकी महानता साधारण बुद्धि से इतनी परे है कि उसे समझना, वर्णन करना और भी कठिन है। उनका जन्म और कर्म दिव्य था। श्री, समृद्धि और दया का दूसरा नाम माताश्री राजेश्वरी था। वे जहाँ भी गयीं, जहाँ भी रहीं, उनके लिए सब कुछ पहले से ही तैयार मिलता था। कहते हैं कि महान पुरुषों की सेवा में सभी प्रकार की ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ हाथ जोड़े खड़ी रहती हैं। श्रीमाँ जहाँ गयीं, वहीं मंगल हो गया। श्रीमाँ वात्सल्य और प्रेम की देवी थीं। भक्तों और सेवकों के लिए सदैव उनके हृदय में अनन्त प्यार छलकता रहता था। श्रीमाँ का प्रेम विश्व से भी विशाल था और उनके हृदय में सारा संसार शरण ले सकता था। उनकी महत्ता, उनकी कृपा और उनकी अलौकिक शक्ति की कोई सीमा नहीं थी। वे मेरी माँ थीं, उसकी माँ थीं, हम सभी की माँ थीं, सचमुच वे जगत जननी माँ थीं।

श्रीमाँ का सेवकों और भक्तों के प्रति एक विशेष प्रेम और लगाव था। जैसे एक साधारण माँ अपने काने बेटे को भी राजा बेटा कहती है, ऐसे ही जगत जननी श्रीमाँ अपने गुणहीन, सीधे-साधे सेवक को भी अपना राजा बेटा ही समझती थीं। जिसने भी उनके लिए दो आँसू बहा दिये, वे उसको सब कुछ देने के लिए तैयार हो जाती थीं। श्रीमाँ ने अपनी शरण का आँचल इतना विशाल कर दिया था कि जगत के सभी उत्पीड़ित, निःसहाय व्यक्ति शरण पाकर, उनके वात्सल्य का रसास्वादन कर कृतार्थ हो जाते थे।

श्रीमाँ ने अपने जीवन काल में निरन्तर ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। लाखों लोगों को अपने सत्संग-प्रवचन से लाभान्वित किया। हजारों को दीक्षित किया और अनेक स्त्री-पुरुषों को संन्यास देकर ज्ञान के प्रचार में लगाया। श्रीमाँ का प्रादुर्भाव का उद्देश्य ही अनन्त जीवों की सुषुप्त चेतना को जाग्रत करना रहा है। श्रीमाँ का शक्तिपात भक्तों

की चेतना पर प्रत्यक्षतः चार रूपों में होता रहा, जिन्हें आध्यात्मिक भाषा में ज्ञान-दीक्षा, स्पर्श-दीक्षा, दृष्टि-दीक्षा और आशीर्वाद-दीक्षा कह सकते हैं। श्रीमाँ ने लाखों नर-नारियों को शब्द-ब्रह्म और ब्रह्म-ज्योति का व्यावहारिक बोध कराकर अपनी कृपा से उनके जीवन को ऊर्ध्वमुखी कर दिया। उनके दर्शन और चरण स्पर्श ने लाखों जीवों के सुषुप्त स्पंदन को जागृत कर दिया। श्रीमाँ की कृपा दृष्टि ने उनके जीवन को निहाल कर दिया और श्रीमाँ ने अपने आशीर्वाद से उनकी मनोकामनाओं को पूरा कर दिया। वे चन्दन के वृक्ष के समान सबको सुगंध बांटती रहीं और उद्विग्न हृदयों को अपने अमृतमय वचनों से शीतलता प्रदान करती रहीं। श्रीमाँ में माहेश्वरी की विशालता, अपार करुणा, महाकाली की अदम्य शक्ति एवं प्रलयंकर प्रताप, महालक्ष्मी की कान्ति, माधुर्य और सौन्दर्य तथा सरस्वती की निपुणता एवं निर्दोषता का सामंजस्य था। वे ही भक्तों का सर्व-मंगल करने वाली तथा ज्ञानामृत पिलाने वाली अमृतमयी थीं, वे अनन्तरूपा एवं शक्तिरूपा थीं।

श्री माता जी, श्री हंस जी महाराज के महाप्रयाण के पश्चात लगातार जीवन-पर्यन्त अनवरत अध्यात्म ज्ञान की अमृत वर्षा करती रहीं। अनेक संघर्षों को उन्होंने झेला, अनेक दानवी शक्तियों का सामना किया, निंदा और स्तुति से ऊपर उठकर सदैव अपने आपको ज्ञान-प्रचार के लिए समर्पित कर दिया। सतत् कर्म ही उनका स्वभाव था। वे अपने प्रवचनों में कहा करती थीं कि “मैं कर्म में विश्वास रखती हूँ”, मेरे लिए कर्म ही चमत्कार है। यदि श्री हंस जी महाराज के महाप्रयाण के पश्चात मैं केवल उनकी मूर्ति के आगे धूप जलाती और अर्चना करती रहती, तो आज यह सब सम्भव न हो पाता। इसलिए भक्तों और मानव-जाति को मेरा एक ही संदेश है कि निष्काम भाव से सतत् कर्म करो और हृदय से प्रभु को याद करो।” रामचरितमानस में कहा गया है-

कर से कर्म करो विधि नाना। मन राखो जहाँ कृपा निधाना।

माताश्री राजेश्वरी देवी शक्ति थीं, पराशक्ति थीं। वे एक नारी थीं, एक भद्र नारी, एक प्रतिष्ठित नारी। वे थीं एक साध्वी नारी, जिनमें आद्या शक्ति का मातृत्व प्रकट हो गया था। समस्त नारियों को ही शक्ति का रूप माना जाता है; लेकिन धन्य है वह नारी, पूजनीय है वह माता, जिसमें वह शक्ति प्रकट हो, जो विश्व जननी बन अपने आँचल की छाया से समस्त संसार को शांति दे और ज्ञान-उपदेश से धन्य-

धन्य कर दे। ऐसी ही थीं- हमारी माताश्री राजराजेश्वरी देवी। श्रीमाँ अपनी सन्तति की आश्रय, पोषक, निर्देशक और मधुर गुरु तथा दण्ड देते हुए भी क्षमा की अमर धारयित्री थीं, वही हमें जन्म-जन्मान्तर से अपनी अपार ममता और करुणा में धारण किये हैं। वही हमारी चेतना की एक-एक पंखुड़ी खोल रही हैं, वही हमारे जीवन में अंतरात्मा के विकास की लीला साधने वाली योगिनी हैं, वही आद्या पराशक्ति हैं। श्रीमाँ हम सबके भीतर की अंतर्यामी सत्ता हैं, चेतना की दिव्य ज्योति हैं! श्रीमाँ कहा करती थीं- “अभी तुम मुझे पहचान नहीं रहे हो, जब मैं चली जाऊँगी, तो मेरे मंदिर बनेंगे और घर-घर में मेरी पूजा होगी।” श्रीमाँ का रूप बदल गया। आज श्रीमाँ एक व्यक्ति के रूप में शरीरधारी नहीं रहीं; बल्कि अपने विश्व-विशाल रूप में प्रतिष्ठित हैं। श्रीमाँ एक व्यक्ति की नहीं, नई चैतन्य सृष्टि की कहानी बन गयी है, श्रीमाँ को अब दिक्काल की सीमाएं बाँध नहीं पायेंगी। जब चाहें, जहाँ चाहें प्रकट हो, भक्तों को दर्शन देती हैं!

श्री माता जी, श्री हंस जी महाराज के लिए एक अनुपम सहकारिणी एवं सहधर्मिणी थीं। अपने जीवनकाल में उन्होंने श्री महाराज जी की गरिमा और मान-मर्यादा को सदैव ऊँचा रखा। श्री हंस जी महाराज का आकस्मिक महाप्रयाण एक ऐसी घटना थी, एक ऐसा विस्फोट था, जिसने श्री माता जी के वास्तविक व्यक्तित्व को प्रकट किया और श्रीमाँ ने न केवल मातृधर्म को अपने सुपुत्रों के प्रति पूरा किया, बल्कि पितृधर्म को भी पूरी तरह निभाया और श्री महाराज जी की कीर्ति को अपने पतिव्रत धर्म की शक्ति से दिग-दिगंत में फैलाया। श्रीमाँ बताती थीं कि मुझे समझाते हुए श्री महाराज जी ने कहा था “नारी के अनेक धर्म होते हैं, वह केवल पत्नी के रूप में पति की पत को ही नहीं रखती, बल्कि उसका पितृधर्म भी है, वह पिता के रूप में न केवल अपने बच्चों का लालन-पालन ही करती है, बल्कि पति के अधूरे कार्यों को भी पूरा करती है और उसी के पदचिन्हों पर चलकर यश और कीर्ति को प्राप्त करती है।” श्री माता जी ने अपने जीवनकाल में श्री महाराज जी की इस सीख को पूर्णतः अपनाया और अपने पारिवारिक कार्यों को करते हुए श्री महाराज जी के ज्ञान-प्रचार को भी पूरी तरह से संभाला। श्रीमाँ ने अपने साहस, संकल्प, निष्ठा और दूरदर्शिता से यह सिद्ध कर दिया कि वे एक साधारण गृहणी होते हुए भी असाधारण कार्यों को करने की क्षमता

और शक्ति रखती हैं। श्री महाराज जी के महाप्रयाण के पश्चात श्रीमाँ की शक्तियों का बहुआयामी प्रकटीकरण हुआ और उन्होंने हर क्षेत्र में, चाहे वह पारिवारिक हो, सामाजिक हो या आध्यात्मिक- एक आदर्श स्थापित किया। श्रीमाँ ने पारिवारिक उत्तरदायित्वों को निभाते हुए गृहस्थ जीवन और अध्यात्म का सामंजस्य कैसे हो, यह उदाहरण विश्व नारी के सामने रखा। श्रीमाँ ने एक बार कहा था- “सच्ची आध्यात्मिकता घरबार का त्याग करना नहीं, बल्कि पारिवारिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों को निभाते हुए आध्यात्मिक साधना के साथ जीवन को जीना है।”

श्रीमाँ की दिनचर्या प्रातःकाल से ही आरंभ हो जाती थी। साधु-महात्मा, आश्रमों के इंचारज और प्रेमीभक्त उनके दर्शन के लिए आते थे और अपनी-अपनी समस्याएं और शिकायतें श्रीमाँ के समाने रखते थे। श्रीमाँ बड़े ध्यान से उनकी शिकायतें और समस्याएं सुनती थीं और सुलझाती थीं। वे सबको तसल्ली कर भेजती थीं और उनके तनाव व दर्द हर लेती थीं। श्रीमाँ न खुद खाली बैठती थीं और न ही किसी को बैठने देती थीं। रसोई में काम करना, सब्जी काटना, चावल चुनना, कबूतरों, चिड़ियों इत्यादि को दाना चुगाना, पेड़-पौधों की देख-रेख करना, पुत्रों की पढ़ाई का ध्यान रखना, रिश्तेदारों के घर आना और जाना, सभी पारिवारिक कार्यों एवं संस्था व गुरु दरबार संबंधी कार्यों को श्रीमाँ बखूबी करती रहती थीं। सच तो यह है कि वे कर्मयोगिनी थीं, जो सतत कर्म में निष्काम भाव से लगी रहती थीं- चाहे वह लौकिक हो या पारलौकिक।

श्रीमाँ समय-समय पर अपने सेवकों को व्यावहारिक सीख और उपदेश दिया करती थीं। अपने सेवकों को बड़े प्यार से समझाती थीं और कई बार स्वयं करके दिखाती थीं। ये श्रीमाँ की कृपा का ही प्रताप था कि जो भी उनके सान्निध्य में आया उन्होंने उसकी क्षमता को पूर्णरूपेण विकसित किया। सेवकों के लिए श्रीमाँ का प्यार अद्वितीय था। वे कहती थीं- “अरे, जो गुरु दरबार में हैं, उनकी चिन्ता गुरुमाता ही करती है और यह मेरा कर्तव्य बनता है कि मैं अपने शिष्यों व सेवकों का हरप्रकार से ध्यान रखूँ।” यही कारण है कि आज भी उनके शिष्य, सेवक और भक्त उन्हें पल-पल याद करते हुए बोल उठते हैं-**श्री माता जी का प्यार दुलार! याद कर रहा यह संसार!!** ऐसी परमकरुणामयी प्यारी ममतामयी माँ को हम पुनः-पुनः स्मरण करते हुए बारंबार नमस्कार करते हैं। ■

श्री हंस जयंती - 125वां वर्ष
महाकुम्भ प्रयाग-1954

चेतन वह है, जो सर्वव्यापक है

-परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

भारत की भूमि पर जहाँ गंगा और यमुना का संगम है, वहीं प्रयाग है। इसी संगम में जहाँ अदृश्य सरस्वती समाहित है, वहीं त्रिवेणी है। सदियों से देवताओं, ऋषि-मुनियों, तपस्वी, संन्यासियों, राजा-महाराजाओं एवं गृहस्थजनों का यह यज्ञ-स्थल रहा। स्वयं ब्रह्मा ने यहाँ यज्ञ किया। इसलिए यह प्रयाग ही नहीं, तीर्थराज प्रयाग हो गया। भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं दर्शन की चरम उपलब्धि की कसौटी प्रयाग, धर्मपरायण जनता का आज भी आस्था का केन्द्र बना हुआ है। यह ऋषियों, सूफियों, सन्तों और दानीश्वरों का नगर विभिन्न जवानों, संस्कृतियों का संगम, आजादी के मतवालों की कर्म भूमि



रहा है। यह नगर अपनी धार्मिकता के लिए जहाँ प्रसिद्ध है, वहीं यह देश की सांस्कृतिक राजधानी भी रहा है। शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में यहां की महान विभूतियों और विचारकों से संपूर्ण भारत प्रभावित रहा है। यहाँ भगवान राम आए और भारद्वाज ऋषि के आश्रम में ठहरे। इस संगम स्थली में प्राचीन काल से ही माघ मेला आयोजित होता रहा और अर्द्धकुम्भ और कुम्भ के अवसर पर देश की करोड़ों जनता मुक्ति की लालसा में संगम-स्नान हेतु आज भी आती है। इसी प्रयागराज में श्री हंस जी महाराज के अनेक शिष्य थे और यदा-कदा श्री महाराज जी का प्रचार हेतु इस नगर में आना होता रहता था; लेकिन सन् 1954 के कुम्भ मेले में श्री महाराज जी ने झूसी में एक कैंप लगाकर लगातार प्रचार किया। श्री महाराज जी का एक अद्भुत एवं अलौकिक भव्य जुलूस भी निकाला गया, जो झूसी कैंप से शुरू होकर प्रयागराज के मुख्य-मुख्य मार्गों से गुजरता हुआ वापस झूसी कैंप पहुँचा। मुकुट और पीतांबर में श्री महाराज

जी की भव्य सवारी अलौकिक थी और अपार भीड़ श्री महाराज जी के दर्शनों के लिए मेले में और नगर की सड़कों पर इकट्ठा हो गई थी।

इस अवसर पर दिल्ली से भी कई प्रेमीभक्त प्रयागराज गए थे। हरिशंकर नाम का एक बालक, जो श्री महाराज जी से बहुत प्रेम करता था, इस मेले में जाना चाहता था; लेकिन आर्थिक स्थिति

ठीक न होने के कारण उसके पिताजी उसको घर पर ही छोड़ गए, जिससे वह दुःखी हो गया; लेकिन वह अपने अंदर-ही-अंदर प्रार्थना करता रहा कि हे गुरु महाराज, मुझे भी इस मेले में बुलाओ। अंतर्दामी सद्गुरुदेव ने उसकी प्रार्थना को सुना। दो दिन बाद उसके घर में दो महात्मा पधारे और बोले, चलो, तुम्हें प्रयागराज चलना

है, श्री महाराज जी ने तुम्हें बुलाया है। प्रयागराज पहुँचने पर उसने श्री महाराज जी के दर्शन किए। उन्होंने किसमिस-काजू का प्रसाद दिया और गंभीर होकर कहने लगे- अरे हरि, तेरे पिता तो कल वापस दिल्ली चले गए। तो उसने कहा, मेरे तो पिता आप ही हैं, आपको मैं याद कर रहा था और आपने कृपा कर मुझे यहाँ बुला लिया। अब किसी के आने-जाने की मैं चिंता क्यों करूँ? उस कुम्भ मेले में जो प्रेमीभक्तों को आनंद मिला, वह चिरस्मरणीय रहेगा। भंडारे में खाना बनाते समय आलू-मटर छीलने के लिए प्रेमीभक्तों के साथ ही श्री महाराज जी भी जमीन पर बैठ जाते थे। क्या आनंद था वह, प्रेमीभक्तों के लिए क्या उनका प्रेम था।

एक दिन मेले में श्री महाराज जी घूमते-घूमते ऐसी जगह पर पहुँचे, जहाँ लोग ढोलक-चिमटा बजाकर जोर-जोर से कीर्तन गा रहे थे, आजा कृष्ण प्यारे मुकुट सिर धार के। वह थोड़ी देर वहाँ खड़े रहे और फिर मुस्कराते हुए चल दिए और कहने लगे- देखो!

कैसे मूर्ख लोग हैं, गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहे हैं; लेकिन सामने खड़े रहने पर भी पहचानते नहीं। कबीरदास जी ने सही कहा है, 'यह जग अंधा मैं केहि समझाऊं' सामने कृष्ण आने पर भी नहीं पहचानते। प्रेमीभक्तों ने प्रणाम कर जोर से जयकारा लगाया। झूसी पंडाल में एक दिन एक महात्मा पधारे। श्री महाराज जी के सत्संग के उपरांत उन्होंने भी बोलने के लिए समय मांगा। श्री महाराज जी कहा- जो कहना चाहते हैं, बड़ी खुशी से कहिए, यह तो सच्चाई का दरबार है, यहाँ झूठ को ठिकाना नहीं है और सच्ची बात को सभी मानने को तैयार नहीं। महात्मा जी कहने लगे- पहले कर्मकांड करो, फिर उपासना करो, तभी ज्ञान होगा, प्रकाश-प्रकाश चिल्लाने से ज्ञान नहीं होता है। इसलिए जनता को इनकी प्रकाश की बातों में नहीं आना चाहिए। सभी नाम भगवान के हैं, चाहे जिस नाम का स्मरण-कीर्तन करो, तब करते-करते जन्म-जन्मातरो में मन एकाग्र हो ही जाएगा। उन्होंने अपने विचारों से बैठी जनता को यह जनाने की बहुत कोशिश की कि परमात्मा के प्रकाश को कोई भी नहीं देख सकता, पर सुनने वाले श्रोताओं ने उनकी बातों की ओर ध्यान नहीं दिया।

इसके उपरांत श्री महाराज जी ने कहा- महात्मा होकर भी दुनिया को धोखा दे रहे हो, जब परमात्मा की ज्योति देखी ही नहीं जा सकती, तो सभी धर्मग्रंथों में क्यों लिखा है और कभी देख ही नहीं सकते, तो धर्मग्रंथों का पाठ करने से क्या लाभ? सीधी-सादी बातों में हमारा कहना यही है कि मनुष्य योनि का सबसे उत्तम कर्म यही है कि हम अपने अंदर की परमात्मा की रोशनी को सच्चे गुरु के पास जाकर देखें। गुरु ही उस रोशनी को दिखाते हैं। जब उस रोशनी को जानोगे और उसका ध्यान करोगे, तभी तो उपासना होगी। गायत्री मंत्र में भर्गो ज्योति का ध्यान करने के लिए ही कहा गया है। केवल गायत्री मंत्र को रट लेने से कुछ भी लाभ नहीं होगा। कुंभ में जब श्री महाराज जी का जुलूस निकला, तो उनकी सवारी हाथी पर थी, जुलूस बहुत शानदार था। कई ट्रकों पर चार लाउडस्पीकर लगे हुए थे, जिनमें महात्मागण बैठे थे और सत्संग-कीर्तन होता जा रहा था। एटम बम की पुस्तिका और अनेक प्रकार के पर्चे बांटे जा रहे थे। आगे एक रिक्शा में घोषणा हो रही थी- 'भगवान का अवतार हो गया है। आओ, भगवान के दर्शन करो और इनसे उसी प्रकाश को जानो, जिसे भगवान कृष्ण ने अपने प्रिय भक्त अर्जुन को दिखाया था और नींद में सुमिरण होने वाले नाम को जानो।'।

कुम्भ में श्री महाराज जी को एक बंगाली सज्जन मिले, वे अंग्रेजी शासनकाल में इंजीनियर थे। उनका सब कुछ पाकिस्तान में रह गया, अब कोलकाला में एक किराए के मकान में गुजारा होता था। वे अपनी स्त्री और लड़की को साथ लेकर कुम्भ में आए थे। वे कहते थे- महाराज जी, छः साल से मेरे चित्त में धारणा थी कि कुम्भ

मेले में जाऊंगा, वहाँ महात्मागण पधारे होंगे, उनमें शायद कोई पूरे सन्त मिल जाएं, तो उनसे भक्ति का सरल मार्ग अपने जीवन के उद्धार के लिए पूछूंगा। मैं यहाँ इस विचार से नहीं आया था कि त्रिवेणी नहाने से मोक्ष मिलेगा। वे श्री महाराज जी का सत्संग सुनने के लिए आए, उनको उनकी बातें अच्छी और सच्चाई वाली मालूम हुई। अगले रोज वे सब वहीं आकर रहने लगे। दो दिन के सत्संग के बाद उन्होंने जिज्ञासा प्रकट की, तब श्री महाराज जी ने उन सबको उपदेश किया। उपदेश के बाद भी वे कई दिन तक सत्संग सुनते रहे, फिर श्री महाराज जी के साथ दूसरे स्थान पर आ गए।

जब श्री महाराज जी मेले से आने लगे तो बंगाली महाशय कहने लगे- महाराज जी! मेरा मन तो अब आपको छोड़ने को नहीं करता। यही जी चाहता है कि सदा आपके चरणों में ही रहूँ और अपने जीवन का कल्याण करूँ। आपको छोड़कर संसार में कोई ठिकाना दिखाई नहीं देता। श्री महाराज जी ने उनसे पूछा- आपकी आयु तो बहुत हो गई है, आपने अभी तक कोई गुरु भी बनाया है? बंगाली महाशय कहने लगे- मैंने तो कोई गुरु नहीं बनाया; परन्तु जब मैं छोटा था, तब मेरी मां के पास एक गुरु आया करते थे, मेरी मां ने उन्हीं के चरणों में मुझे डाल दिया था। बड़ा होने पर मैं काली माँ की पूजा करता रहा और इन्हीं को मानता हूँ। श्री महाराज जी उनको समझाया कि वह महाशक्ति एक ही है। वही चेतन शक्ति माता-पिता बंधु-सखा सबमें ही है। चेतन को अर्थात् आत्मा को जानना ही परा विद्या बताया है। उस महाशक्ति के लिए ही कहा है कि तू ही माता-पिता, बंधु-मित्र और तू मेरा धन है और सब प्रकार से तू ही मेरा देवों का देव है। मां काली ही चेतन रूप होकर सभी प्राणियों में निवास करनी वाली हैं। वह प्रकाश रूप हैं। जब बंगाली महाशय ने महान शक्ति मां काली का प्रकाश अपने घट में देखा, तो कहने लगे, भगवन! मैं अब साधु बनकर आपके चरणों की सेवा करना चाहता हूँ। कोई कार्य हमको करना बाकी नहीं है। फिर उन बंगाली महाशय ने कहा कि भगवन् हम तो यही समझते हैं कि प्रभु ने जो प्रकाश हमको दिखाया है, यह अलौकिक है और जो नाम बताया है, वह सबके हृदय में ही रहते हुए भी बिना गुरु की कृपा के नहीं जाना जा सकता। यदि भगवान श्रीकृष्ण भी तुमको मिलते, तो वे भी इसी प्रकाश और नाम को बताते, जिसे प्रभु ने हमको अपनी कृपा से बताया है। श्री कृष्ण भगवान का भी शरीर पंच तत्वों का था और गुरु महाराज, आपका भी शरीर पंच तत्वों का है, हम कैसे जानेंगे की आप वही कृष्ण नहीं हो? हाँ, कोई द्वापर के समय का मिले और वह कहे कि ये कृष्ण नहीं हैं, तो दूसरी बात है। हमें तो आपका वही मनोहर रूप और छवि मालूम दे रही है। अर्जुन को भगवान मिले, उन्होंने अर्जुन को दिव्य प्रकाश दिखाया और निरंतर सर्वकाल में स्मरण होने वाले अखंड नाम को बताया था। बताने पर भी अभ्यास करने को

कहा था। कबीर ने अपने समय के लोगों को प्रकाश “नूर” बताया, सतनाम बताकर सेवा-सत्संग, भजन-अभ्यास करने के लिए कहा। हमारा दिल तो कहता है कि आप ही साक्षात् भगवान कृष्ण हो। बिना भगवान के कोई भी इतना प्रेम नहीं करता। हमें स्वयं आपने अपनाकर हमारा उद्धार किया है। हमारा यहाँ आना सार्थक हो गया है। अब हम आपकी आज्ञानुसार 24 घंटे परमात्मा के नाम का स्मरण कर सकेंगे। भगवान राम भिलनी को मिले। भिलनी के प्रेम को भगवान देखकर गद्गद् हुए, फिर नवधा भक्ति समझाई।

हमारे लिए आप ही भगवान राम हैं। आपने हमको हमारे स्वरूप का ज्ञान करा दिया है, जिसके जान लेने और देखने पर हमें परमशांति मिली है। मैंने अनेक बड़े-बड़े अंग्रेजों, नेताओं और महात्माओं के दर्शन किए; परन्तु किसी ने भी मुझे दिव्य प्रकाश और नींद में भी स्मरण होने वाला नाम नहीं बताया। प्रभु, आपको मैं कुछ नहीं दे सकता हूँ। तीनों लोकों की संपदा भी मुझे मिले और वह भी प्रभु के चरणों में भेंट करूँ, तो भी प्रभु, आपके दिए हुए ज्ञान का बदला नहीं चुकाया जा सकता। वह बंगाली महाशय नहीं जाना चाहते थे; परन्तु किसी कारणवश भेजना पड़ा।

कुम्भ मेले में श्री महाराज जी का सत्संग कई दिनों तक चलता रहा। सत्संग में सुनाते हुए उन्होंने भगवद्भक्तों से कहा- यह कुम्भ मेला हिन्दुओं का है, कितने लोग आए हुए हैं और जगह-जगह कीर्तन हो रहे हैं। यदि मैं किसी पहाड़ का पत्थर होता और पत्थर गढ़ने वाला मूर्ति बनाता, तब मैं एक मंदिर में रखा जाता और तुम लोग मुझे ऐसा ही कोट पहनाते, टेढ़ा मुकुट लगाते, बंसी मुँह में लगाते, भोग लगाते, घंटी हिलाते, तो सारा मेला पसंद करता; जबकि मैं उस परमात्मा के नाम व प्रकाश को जानने के लिए कह रहा हूँ, तब न बता सकता था। तो सभी महात्मा, पंडित, ज्ञानी, महाज्ञानी आते और साष्टांग दंडवत प्रणाम करके पूजा करते, किन्तु दुर्भाग्यवश भगवान की कृपा से मैं मनुष्य बन गया हूँ। पत्थर का भगवान, जिसको तुम मानते हो, वह प्रकाश नहीं दिखा सकता; नहीं तो तुम पूछकर देख लो। मैं प्रकाश दिखाता हूँ, तो कोई नहीं मानता। यों तो बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, वेदों के चार महावाक्य कहते हैं, अहं ब्रह्मास्मि, तत्त्वमसि आदि। वेदों में लिखा है कि मनुष्य बनने से पहले चेतन था। आज सब राम की नकल करते हैं; किन्तु राम ने क्या कहा है, यह नहीं जानते और न ही जानने की कोशिश करते हैं। बस राम-राम कहो, पार हो जाओगे। साँप निकल गया, लकीर पीट रहे हैं। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि मेरी दो प्रकृति हैं- जड़ और चेतन। चेतन वह है, जो सर्वव्यापक है, जिससे सारा संसार काम कर रहा है, जिसके होने से शरीर हरकत करता है और जड़ वह है, जो हरकत नहीं करता और न ही बोल सकता है, न समझा ही सकता है। इसीलिए चेतन की पूजा होती है। हमारा कहना भी यही है कि मनुष्य तन, जो देवताओं को भी दुर्लभ

है, उसको पाकर चेतन को मानो। भगवान राम कहते हैं-

बड़े भाग मनुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सदग्रंथहि गावा।।

ऐसा मनुष्य तन “जो देवताओं को भी दुर्लभ है” पाकर हम देवताओं की उपासना करके समझते हैं कि हमारे बड़े भाग्य हैं। हम बड़े भक्त हैं, तो बताओ क्या यही अक्लमंदी है? करना था क्या और कर रहे हैं क्या? यह मनुष्य तन तीन जगहों के लिए सीढ़ी है-

नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी। ग्यान बिराग भगति सुभ देनी।।

जीव मनुष्य तन पाकर छोटे कर्म करता है, तो नरक भोगता है और अच्छे काम करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है; किन्तु जब प्रभु के नाम व प्रकाश को जान लेता है, तो मैं नहीं कहता, भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि प्रकाश स्वरूप परमधाम को प्राप्त होकर जीव इस संसार चक्र में नहीं भ्रमता। जिसको न सूर्य, न चंद्रमा, न अग्नि ही प्रकाशित कर सके, वह तो स्वयं प्रकाश है, जहां से जीव नहीं लौटता, उस परमधाम को यदि मनुष्य तन में नहीं देखा, तो क्या कुत्ता, गधा, सूअर बनकर देखोगे? यह रूहानियत है, सच्चाई से प्राप्त होती है। शिष्य उपदेश लेते ही कहता है कि महाराज जी, सुरति ऊपर नहीं चढ़ी, मन नहीं टिकता। यूँ तो राजा जनक की उपमा देते हैं; परन्तु क्या राजा जनक की तरह मन भी गुरु को दिया? नहीं तो फिर केवल कह देने से कि महाराज तन, मन, धन आपका ही है, पर सेवा कर रहे हैं स्त्री, पुत्र, रिश्तेदारों की, मेरी सेवा तो स्वप्न में भी नहीं की और न दर्शनों की ही इच्छा है, तो फिर कैसे चढ़ जाएंगे? यदि चढ़ सकते हो, तो केवल मनुष्य तन में ही। इसीलिए कहा है कि यह अमूल्य मनुष्य तन बहुत दुर्लभ है, इसे व्यर्थ न गंवाओ। बड़े भाग्य से भगवान के दर्शन होते हैं। यदि मैं नकली राम होता और धनुष बाण लेकर रावण को सामने आने पर भी न मार सकता, तो सभी कहते कि बहुत अच्छे दर्शन हुए; किन्तु जो बात भगवान राम ने बताई, मैं उसी को जानने के लिए कहता हूँ, तो संदेह करते हैं।

तुम लोग मंदिर में कृष्ण व राम की पूजा करते हो और सामने रामलीला हो रही है, जिसमें कृष्ण का पाठ करने वाले से या उन मंदिरों के राम व कृष्ण से पूछो कि वह प्रकाश, जो दिन-रात रहता है और वह नाम, जो हर समय नींद में भी जपा जा सके, बताओ? यदि मैं उस सच्चे नाम व परम प्रकाश को बताता हूँ, तो क्या यह बुरा कर्म है, जो तुमको भ्रम होता है? जो न बता सके, उसे तो भगवान मानते हो; किन्तु वही परम प्रकाश व नाम मैं बताता हूँ, तो मेरे मुकुट पहनने से तुम्हें भ्रम होता है। बड़ा आश्चर्य है कि मुझे पत्थर के बराबर भी नहीं समझते। सन्त तुलसीदास कहते हैं कि संसार के लोगों की आंखों में मोतियाबिंद हो गया है। यूँ जगह-जगह टोली बनाकर गा रहे हैं- आज कृष्ण आज कृष्ण, पूछो! कहाँ से आएगा? वह तो हृदय में है भाई! उसको हृदय में ही जानो। यही मनुष्य तन पाने का फल है। ■

संकर भजन बिना नर, भगति न पावइ मोरि

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! राजा परीक्षित को जब शुकदेव मुनि ज्ञान देने के लिए पहुंचे, तो वहां उपस्थित सब लोग उठकर खड़े हो गए और हाथ जोड़कर शुकदेव मुनि का अभिवादन किया। शुकदेव मुनि व्यास गद्दी पर जाकर बैठ गए। राजा परीक्षित ने व्यास जी से पूछा कि छोटे से बालक के लिए आप सब लोग उठकर खड़े हो गए, शुकदेव जी के अंदर ऐसी क्या बात है? व्यास जी ने कहा कि राजन, शुकदेव ज्ञान में सबसे बड़े हैं और वे ज्ञान का स्वरूप हैं। इसलिए हम सब लोग ज्ञानी का सम्मान करने के लिए उठे। मैं शुकदेव का पिता हूँ और सामने जो ऋषि बैठे हुए हैं, ये मेरे पिता हैं और शुकदेव के दादा हैं, लेकिन वे भी ज्ञान का आदर करने के लिए अपने स्थान से उठे। आज समय कितना बदल गया है, लोग ज्ञान को तो जानना चाहते हैं; लेकिन ज्ञानी और संतों का सम्मान नहीं

करना चाहते। जब तक हमारे अंदर संतों के प्रति सम्मान का भाव नहीं होगा, श्रद्धा और प्रेम नहीं होगा, तब तक हृदय में ज्ञान कैसे उपजेगा?

आप सब पढ़े-लिखे लोग हैं, गांव-गांव में बड़े-बड़े स्कूल और कालेज खुले हुए हैं। आप लोग एक दोहे का ही अर्थ बताओ-

माला फेरत युग गया,

पाया न मन का फेर।

कर का मणका डार दे,

मन का मणका फेर।।

कहाँ है मन का मणका? और अगर यह दोहा पढ़ाने के काबिल नहीं हो तो क्यों पढ़ाते हो, क्यों लड़कों के ऊपर बोझ लादते हो? तुम बड़े-बड़े प्रोफेसर



हो, लेकिन एक दोहे का, एक श्लोक का और एक लाइन का अर्थ नहीं बता सकते? तुम तो इसका अर्थ बताओगे कि हाथ की माला डाल दो और मन की माला फेरो, लेकिन जब मालूम होगा, तभी तो मन की माला फेरोगे?

श्रीमद्भगवत् गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाते हुए कहा कि हे अर्जुन! वेद पढ़ने से, यज्ञ करने से, दान करने से, तीर्थों में स्नान से मेरा तत्त्वज्ञान नहीं होता। मेरा तत्त्वज्ञान तो केवल अनन्य भक्ति से होता है। हे

दुनियाँ के लोगो! मैं आपसे पूछता हूँ कि अनन्य भक्ति क्या है, बतावे कोई? पिछली बार प्रयागराज में जो महाकुम्भ हुआ था, उसमें मैं शामिल होने के लिए गया था। श्री के.एम.मुन्शी जो उस समय यू.पी. के गवर्नर थे, मैंने उनसे मुलाकात की और कहा कि यहां पर अनेक धर्माचार्य, महामण्डलेश्वर और जगद्गुरु शंकराचार्य आदि आये हुए हैं। आप उन सबको एक स्थान पर बुलवाओ और उनसे पूछो कि सत्य क्या है? सत् और असत् का निर्णय कराओ। गवर्नर साहब कुछ नहीं बोले। मैंने कहा कि इनको सत्य का ज्ञान नहीं है। जो सत्य को जान जाता है, सत्य नाम का सुमिरण करता है, तो उसको किसी से भय नहीं लगता। संतों ने कहा है-

काल पकड़ चेला किया,

भय के कतरे कान।

सतनाम सुमिरण करें,

किसको करें सलाम।।

जो लोग सत्य नाम का सुमिरण करते हैं, वे काल को चेला बनाकर भय के कान कतर देते हैं। लेकिन सत्य नाम है क्या, हमें इस बात को समझना चाहिए। मैं मुम्बई गया और वहां पर सत्संग किये। तीन-चार बार के.एम. मुन्शी हमारे सत्संग में आये और मैंने भी उन्हें खूब सुनाया। जब वे यू.पी. के गवर्नर थे, तो मैंने कहा था कि कुम्भ में सबको इकट्ठा करो, यहां पर सब आये हुए हैं। अपने घर चाय पर बुला लो और

सत्य का निर्णय करा लो, लेकिन तब नहीं कराया। अरे, तुम तंत्र-मंत्र को सच्चा समझते हो, लेकिन ये तंत्र-मंत्र सब झूठे हैं। संतों ने कहा-

तंत्र-मंत्र सब झूठ है,

मत भरमो संसार।

सार शब्द जाने बिना,

कोई न उतरसी पार।।

मैं पूछता हूँ कि जब तुम मन्त्र जपते हो, तो तुम्हारा मन कहाँ टिकता है? तुम मंत्र जपते हो और तुम्हारा मन दसों दिशाओं में फिरता है। तो ऐसे नाम-सुमिरण का क्या लाभ हुआ। भगवान श्री राम अयोध्यावासियों को हाथ जोड़कर कहते हैं-

औरु एक गुपुत मत,

सबहि कहउँ कर जोरि ॥

संकर भजन बिना नर,

भगति न पावइ मोरि ॥

आप सभी को एक गुप्त मत बताता हूँ कि भगवान शंकर के भजन के बिना कोई भी मनुष्य मेरी भक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता। शंकर भजन क्या है, हमें इसे समझना होगा। एक लोटा जल और बेल-पत्र शिवजी के ऊपर डाल देना या 'ओम् नमः शिवाय' कहना, क्या यही शंकर भजन है? यह शंकर भजन नहीं है। महामंत्र उसको कहते हैं, जिसका न शुरू हो, न आखिर हो। उसको नानक साहब कहते हैं-

आदि सच जुगादि सच,

है भी सच,

नानक होसी भी सच।।

जो तीनों कालों में सत्य हो, उसको कहते हैं- सत्य। देखो, महात्मा गांधी और पंडित जवाहर लाल नेहरू जैसे महान नेता आज हमारे बीच नहीं हैं! लेकिन एक समय था, जब वे हमारे

साथ थे। तो उसको न सत् कहते हैं, न असत् कह सकते हैं; क्योंकि यह संसार परिवर्तनशील है। इसी तरह यह सारी सृष्टि परिवर्तनशील है।

एक गीदड़ नदी में डूब रहा था, तो उसने कहा कि सारी दुनियाँ डूबी, सारी दुनियाँ डूबी। जब देखने वाले ने उससे पूछा कि डूब तो केवल तू रहा है, दुनियाँ कहाँ डूब रही है? तो उसने कहा कि मैं डूब गया, तो मेरे लिए तो सारी दुनियाँ ही डूब गई। भगवान राम कहते हैं कि शंकर भजन के बिना मेरी भक्ति नहीं मिल सकती और शंकर भजन उस महामंत्र को कहते हैं, जिसका न

आज समय कितना बदल गया है, लोग ज्ञान को तो जानना चाहते हैं; लेकिन ज्ञानी और संतों का सम्मान नहीं करना चाहते। जब तक हमारे अंदर संतों के प्रति सम्मान का भाव नहीं होगा, श्रद्धा और प्रेम नहीं होगा, तब तक हृदय में ज्ञान कैसे उपजेगा?

शुरू हो, न अन्त हो और जिसका जाप स्वयं शिवजी करते हैं। शिवजी माला नहीं फेरते हैं, तुमने उनकी तस्वीर देखी होगी। वह चुपचाप खेचरी मुद्रा लगाकर भजन करते हैं और उस भजन में तालू भी नहीं हिलेगा। गुरु नानक देव जी कहते हैं- भगवान के सच्चे नाम का सुमिरण उठते, बैठते, सोते और जागते हर समय हो सकता है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं कि जो अंत समय में शरीर छोड़ते हुए मेरा सुमिरण करता है, वह निश्चित रूप से मेरे को मिलता है, इसमें जरा-सा भी संदेह नहीं करना चाहिए। लोग समझ लेते हैं कि

पहले तो दुनियाँ को खूब भोग लो, फिर मरते समय भगवान का सुमिरण कर लेंगे और भगवान को मिल जायेंगे। लेकिन, जब आखिरी समय में भगवान मिलते हैं, तो क्या जीवन काल में नहीं मिल सकते? अरे! भगवान तो सुमिरण करने से ही मिलेंगे। जब सुमिरण हम आज करेंगे, तो क्या भगवान आज नहीं मिलेंगे? भगवान श्रीकृष्ण ने फिर बताया कि जो कार्य हमने जीवन भर किया, जो बात जीवन भर अधिक याद रहती है, वही बात मरण काल में भी याद आती है। अन्त समय में वही बात याद आयेगी, जिसे हमने जीवन भर याद किया होगा। जब अभी तक तुमने जाना नहीं कि भगवान के नाम सुमिरण का मार्ग क्या है, अभी तक रास्ता ही नहीं देखा, तो आखिर कहाँ जाओगे?

एक दिन सुबह मैं गाजियाबाद से आ रहा था। गाजियाबाद के पास एक नदी है। उसमें मैंने देखा एक आदमी डूब रहा था। वह नीचे जाता था और ऊपर आ जाता था।

बताओ! उस समय में भगवान के नाम का सुमिरण कैसे करोगे? माला वहाँ नहीं फेर सकोगे, मन्दिर में नहीं जा सकोगे और मान लो पलंग में भी लेटे हुए हो, तो भी अन्तिम समय में तुम्हारे हाथ अकड़ जायेंगे, माला नहीं फेर पाओगे। जुबान नहीं हिल सकेगी, मुँह भी अकड़ जायेगा। अगर मुँह खुला है, तो खुला ही रह जायेगा। एक भी शब्द बोल नहीं सकोगे। आँखों में बदलाव आ जायेगा, देख भी नहीं सकोगे, तो उस समय तंत्र-मंत्र का उच्चारण नहीं कर सकते। इसलिए इधर-उधर न भटक कर सद्गुरु महाराज से भगवान के सच्चे नाम को जानकर भजन करना चाहिए।

परमात्मा का ध्यान करने पर ही शांति मिलेगी

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! अभी हम कई क्षेत्रों से सत्संग करते हुये आ रहे हैं। वहां पर महात्मागण ने सत्संग प्रोग्राम रखे थे। सभी जगह बहुत अधिक संख्या में भक्त सत्संग में आये। हमें कुछ लोग मिले और कहने लगे कि हम विदेश में धन कमाने जाते हैं। पर, धन कमाने के बाद भी हमारे हृदय में शांति नहीं है, हम शांति को खोज रहे हैं। हमने सब कुछ कर तो लिया है, पर हृदय में शांति कैसे मिलेगी,

यह हमको अभी तक समझ में नहीं आया? वे लोग कहते हैं कि हमने बाहरी पूजा-पाठ करके भी देख ली। हमने कण्ठी-माला जपकर भी देख लिया। मुंह से भी राम-राम जपते हैं, पर हमारा मन एक जगह नहीं लगता है। मन चंचल है, वह वहां से भाग जाता है। वे कहते हैं कि महाराज! हमें बताइये कि हम आत्मज्ञान को कैसे अपने हृदय में धारण करें, कैसे हम ज्ञान को जान सकते हैं?

जैसे एक गोताखोर पानी में गोता लगाता है, यदि पानी में उसका ध्यान बंट जाये, तो वह अपने लक्ष्य को भूल जायेगा। जैसे एक बन्दूक चलाने वाला है, यदि उसका ध्यान टारगेट (ध्येय) से हट जायेगा, तो वह कहीं-का-कहीं लग जायेगा। बन्दूक चलाने वाला अपना निशाना लगाने के लिये टारगेट को देखता है, बाकी उसे कुछ नहीं दिखाई

देता। इसी प्रकार हमारा चंचल मन भटकता रहता है, हमें भी अपना ध्यान का निशाना ध्येय (परमात्मा) पर लगाना



है, ताकि मन हमारे काबू में हो सके। मन काबू में कैसे होगा? जब हम ज्योति स्वरूप परमपिता परमात्मा का ध्यान करेंगे। ध्यान करके ही हम चंचल मन को काबू में कर सकते हैं। ज्ञान सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि बताई है, क्योंकि बिना ज्ञान के मनुष्य पशु के समान है। भगवान कहते हैं कि मैंने तो तुम्हें मानुष जन्म दिया। हम इतनी बेशकीमती चीज के महत्व को समझ नहीं रहे, बल्कि हमने इस मानव तन को सांसारिक भोगों में ही गंवा दिया।

एक राजा था। जंगल में भ्रमण करते हुए एक दिन वह रास्ता भटक गया। अंधेरे में उसे एक झोपड़ी मिली, जिसमें एक लकड़हारा रहता था। उस बेचारे ने विनय भाव से कहा कि महाराज! आज रात को आप यहां पर ठहर जाइये, राजा वहां ठहर गया। राजा लकड़हारे के आव-

भाव से बड़ा खुश हुआ। राजा ने एक बेशकीमती चंदन का जंगल उपहार रूप में लकड़हारे को दे दिया, ताकि उसकी गरीबी दूर हो जाए। राजा ने कहा कि तुम कुछ दिनों बाद मेरे घर मिलने के लिए आना। लकड़हारा अज्ञानतावश उस जंगल की लकड़ी को कोयला बनाकर बाजार में बेचता गया। कुछ दिन बाद राजा ने उसे बुलाया और पूछा- भाई, तुम्हारे क्या हालचाल हैं? उसने कहा- महाराज! मैं तो गरीब का गरीब हूं। उसने कहा- आपने मुझे बेशकीमती

लकड़ी का जंगल भी दिया, पर उससे मेरे को कुछ फायदा नहीं हुआ। तब राजा ने उससे पूछा कि तुम क्या करते हो? उसने कहा- महाराज! मैं उसकी लकड़ी को जलाकर कोयला बनाकर उसे बाजार में बेचता हूं। राजा ने कहा कि अरे बेवकूफ! तुम उसका कोयला मत बनाओ। उस लकड़ी को तुम बाजार में बेचकर आओ। जब बाजार में चंदन की लकड़ी के बहुत दाम लगने लगे, तब उसे समझ में आया कि नासमझी के कारण मैंने अपना कितना नुकसान किया।

इसी प्रकार भगवान की दया से हमें स्वांसों का बेशकीमती खजाना मिला है। हमने इसको विषय-भोगों में नष्ट नहीं करना चाहिए, बल्कि सद्गुरु महाराज से भगवान के सच्चे नाम को जानकर भजन-सुमिरण करना चाहिए। तभी हमारा मनुष्य जन्म पाना सार्थक होगा।

हम आध्यात्मिक रूप से देश को ऊंचा उठाना चाहते हैं

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनों! मन के अन्दर तो अशान्ति है और तुम बाहर आनंद खोज रहे हो। भूख तो पेट के अन्दर लगी है और बाहर से भोजन के पदार्थ देख रहे हो, पर पदार्थों को देखने से तो भूख नहीं मिटेगी, उसके लिए तो अन्न खाना ही पड़ेगा, तभी भूख मिटती है। इसी तरह से भगवान का भी ध्यान किया जाता है, और ध्यान में, प्रकाश में, जब आत्मा लीन हो जाती है, तब मन भी शान्त हो जाता है। तब यह शरीर छूट भी जाये, तो उसको दुःख नहीं व्यापता है। जो एक संसार के भोगी को पीड़ा होती है, वह उसको नहीं व्यापती है; क्योंकि वह भजन-अभ्यास करता है और अपने परमपिता परमात्मा से मिल जाता है। इसी तरह से भारतवासियों! तुमने भारत में तो जन्म ले लिया, बहुत-सी साधना भी करते हो, पर वास्तव में सही साधना करोगे, तो बाहर की बहुत-सी विपदाएं दूर हो जायेंगी। एक बार स्वामी विवेकानन्द की सूरत देखकर एक अंग्रेज लड़की कहने लगी- मैं तुम्हें अपना पति बनाना चाहती हूँ। विवेकानन्द कहने लगे- क्यों? तो वह कहती है कि मुझे तुम्हारे जैसा बेटा चाहिए। स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं कि आप मुझे अपना बेटा बना लो, मैं आपका बेटा बनना चाहता हूँ। ज्ञानी की जो दृष्टि होती है, वह माँ रूप होती है।



वह सारी नारियों को माँ के रूप में देखता है। बेटे को अपनी माँ से कामना नहीं सताती है और न माँ को सतायेगी अपने बेटे से। बेटा बूढ़ा हो जायेगा, तब भी

उसका मस्तक ही चूमेगी, उसके लिए वह पुरुष नहीं है, बल्कि वह छोटा-सा बालक ही है। चाहे वह बड़ा नेता बन जाय, पर माँ के लिए बालक ही बना रहता है। इसी तरह ज्ञानियों को भी सब नारियाँ माँ रूप लगती हैं।

अभी आपने सत्संग सुना, हम आध्यात्मिक रूप से अपने देश को बहुत ऊँचा उठाना चाहते हैं। इस देश में गंगा बहती है, इस देश में हिमालय पर्वत है। इस देश में बड़ी-बड़ी सतियों ने जन्म लिया, भक्तों ने जन्म लिया, अवतारों

ने जन्म लिया और आज का इतिहास देखो, सवेरे-सवेरे अखबार देखें, तो पता चलेगा कि ट्रेन लुट गयी, बस लुट गयी, फलानी लड़की के साथ दुष्कर्म हो गया, आजकल यह सब नकारात्मक समाचार छापे जाते हैं। हे भारतवासियों! ये सब खराब वृत्तियाँ समाज के नाम पर कलंक है। इसलिए इन खराब वृत्तियों को, नकारात्मकता को दूर करो, इनसे तो समाज में पाप ही बढ़ेगा, घटेगा नहीं। देख लो, अखबार में आया कि रंगा-बिल्ला को फाँसी हो रही है। अब उनको अच्छी बात याद भी आयी होगी, पर जीवन में तो उन्होंने खराब काम कर लिये। जैसे रावण के राज्य में उसका भाई विभीषण था, पर वह अत्याचार देख नहीं सका और देश को, भाई के घर को तिलांजलि देकर राम की शरण में आ गया। कहता है- भगवान, मैं आपकी शरणागत हूँ, आप मेरी रक्षा करें, मुझसे पाप और अत्याचार देखा नहीं जाता है। मैंने रावण से यही कहा कि माता सीता जगतमाता हैं, भगवान श्री राम की पत्नी हैं, उनसे क्यों वैर करते हो, माता सीता को वापस कर दो, तुम्हारी सारी विपदा हल हो जायेगी। विभीषण कहता है कि भगवान उसने मुझे लात मारी, लात मारने पर मुझसे वह पाप सहन नहीं हुआ, निरादर सहन नहीं हुआ, माँ का निरादर सहन नहीं हुआ और मैं आपकी

शरण में आ गया। लंका का नाश कैसे होगा- विभीषण ने सारा भेद भगवान को बताकर सारी लंका स्वाहा करवा दी। इसी तरह से हमको भी पंचभौतिक शरीर मिला है। इस शरीर के द्वारा अगर अच्छा कर्म करेंगे, तो हमें शान्ति मिलेगी। देखो, गलत काम करके वह इन्सान मर जाता है। पर, उसके गलत कर्म नहीं मिटते। रावण के मरते समय में भगवान राम लक्ष्मण को रावण के पास शिक्षा लेने के लिए भेजते हैं। रावण लक्ष्मण जी से कहता है कि लक्ष्मण, अच्छा काम कल पर नहीं छोड़ना, कल ही का नाम काल है। तो इसी तरह से तीन दिन का यह सत्संग कार्यक्रम आपके लिए किया जा रहा है। हमको तो जरूरत नहीं, हम तो जान चुके हैं। मैं सच कहती हूँ कि हमारे ऊपर तो गुरु महाराज की कृपा है, उन्होंने हमको वह अगाध ज्ञान दे रखा है कि हमें तो जरूरत नहीं। पर, जो भक्त लोग इस ज्ञान को जान चुके हैं, उनका प्रयास है कि इसका प्रचार-प्रसार किया जाए। इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार में वे तन-मन-धन से सहयोग कर रहे हैं। यद्यपि वे आर्थिक रूप से कमजोर हैं, गरीब हैं, पर दिल से गरीब नहीं हैं। उनके सहयोग से कितना महान् काम हो रहा है। लोगों के आत्मिक उत्थान के लिए, उन्हें जगाने के लिए वे निःस्वार्थ कर्म कर रहे हैं। उनको यह इच्छा भी नहीं कि कोई हमारे बच्चों को पढ़ाये, यह इच्छा भी नहीं कि कोई हमको नेता बनाये। ये सब भक्त लोग निःस्वार्थ भाव से गुरु दरबार की सेवा कर रहे हैं।

जिस तरह से भागवत् पुराण में उल्लेख आता है कि सातवें दिन राजा परीक्षित की मौत होने वाली थी। सारे ऋषि-मुनि एकत्रित होते हैं, ज्ञानी

एकत्रित होते हैं और विचार करते हैं कि यदि अज्ञानी रहते हुए ही राजा संसार से चला जायेगा, तो इसका पाप ज्ञानी को लगेगा। इसलिए हे शुकदेव मुनि, यह पाप तुम्हें लगेगा, तुम ज्ञानी हो करके इस राजा को नहीं बचा रहे हो, जिसकी सातवें दिन मौत हो रही है, इसलिए राजा को बचाओ। तब शुकदेव मुनि कहते हैं- राजन्, संसार में सभी की सात दिन में ही मौत होती है। जितने भी संसार में प्राणी हैं, सबकी मौत सात दिन के अन्दर ही होती है।

शुकदेव मुनि राजा परीक्षित को सुनाते हैं कि तेरे वंश में तो राजा आधे घंटे के अंदर मोक्ष को प्राप्त हो गये,

ज्ञानी की जो दृष्टि होती है, वह माँ रूप होती है। वह सारी नारियों को माँ के रूप में देखता है। बेटे को अपनी माँ से कामना नहीं सताती है और न माँ को सतायेगी अपने बेटे से। बेटा बूढ़ा हो जायेगा, तब भी उसका मस्तक ही चूमेगी, उसके लिए वह पुरुष नहीं है, बल्कि वह छोटा-सा बालक ही है।

राजन् सात दिन तो बहुत होते हैं। शुकदेव मुनि राजा परीक्षित को भागवत् की कथा सुनाते हैं और भगवान के उस नाम का ज्ञान करा देते हैं, जो सबमें समाया है। ज्ञान को प्राप्त करने के बाद राजा परीक्षित कहता है- हे शुकदेव जी, मैंने मृत्यु को जीत लिया है, अब मुझे इस पंचभौतिक शरीर से कोई भी मोह नहीं है। तो बताना, राजा ने कैसे मौत को जीत लिया और तुम भी मनुष्य हो, पर जैसे नौका पानी में हिलती रहती है, वैसे ही संसार के विषय-भोगों में तुम्हारी वृत्ति रहती है। फिर भी तुम्हारी तृप्ति

नहीं होती है, तुम्हारी आशा और तृष्णाएं हमेशा बढ़ती ही रहती हैं।

देखो, आज कई मातायें दर्शन के लिए आर्या और आरती करने लगीं। मैंने कहा- भाई, हमने तो तुम्हारे हृदय में ज्योति जला दी है। आजकल तो डालडा भी नहीं मिल रहा है, तेल भी नहीं मिल रहा है, महँगाई बहुत बढ़ गई है। यदि भगवान को एक-एक चम्मच तुमने चढ़ा भी दिया, तो महीने में कितने का बिल आ जायेगा, बताना! भगवान बहुत दयालु होते हैं, उन्होंने तो पहले ही तुम्हारे हृदय में दीपक जला दिया है। बाहर का दीपक तो तुरन्त बुझ जाता है, लेकिन ज्ञान का वह दीपक हमेशा जलता रहता है। योगी लोग उसी के ध्यान में रमण करते हैं और शान्ति को प्राप्त हो जाते हैं।

तीन दिन के इस ज्ञान-यज्ञ में आप अपने बच्चों को संभाल कर रखो और ध्यान से सत्संग सुनकर अपने जीवन का कल्याण करो। देखो, सत्संग सुनने के लिए कम खाओ, जिससे नींद नहीं सतायेगी और तुम सत्संग से वंचित भी नहीं रहोगे। देखो, कम खाना बहुत अच्छा होता है, आलस्य नहीं आयेगा, नींद नहीं आयेगी। सत्संग भी सुनेंगे और साधना भी करते जाएँगे। और जिसको किसी दूसरे की जो भी वस्तु मिलती है, उसको यहाँ पर आफिस में जमा कर देनी चाहिए, दूसरे की वस्तु से कभी कोई अमीर नहीं होता है।

इसी तरह से यहाँ पर जो तीन दिन का महान् सत्संग हो रहा है, उससे कितनों के हृदय में वह जागृति आयेगी, कितने लोग बदल जाएँगे। इसलिए सत्संग सुनकर आत्मज्ञान को जानो और भगवान के सच्चे नाम का खूब भजन-सुमिरण करो।

सत्संग हमें याद दिलाता है भजन सुमिरण की

माताश्री मंगला जी

प्रेमी सज्जनों! सत्संग तो आपको अध्यात्म की ही शिक्षा देगा। आप इतने क्षेत्रों से अपने-अपने गांव से आए, दूर-दराज से आए हैं। कल सत्संग समाप्त होगा, चले जाएंगे; पर किसलिए हम यहाँ आए हैं? कौन-सी पूंजी हमें समेटनी है? हमें सत्संग से किस पूंजी को अपने साथ ले जाना है। संतों का संग करने से हमें उस अमृत बूटी/ज्ञान बूटी की प्राप्ति होती है। अभी महाकुम्भ हुआ, लोगों ने बहुत स्नान किए, नहाए-धोए, सोचा हमारे पाप धुल जाएंगे, पुराने पापों से मुक्त हो जाएंगे और आकर के फिर नए पाप इकट्ठे करने लग गए। यह तो संसार का नियम है। फिर पाप एकत्र हो जाएंगे, फिर अगला कुम्भ आएगा, फिर नहा जाएंगे; लेकिन हम शरीर को नहला रहे हैं, मन को नहीं नहला रहे हैं। इस मानुष चोले को, जिसे स्वयं ही समाप्त हो जाना है, हम उसको बार-बार नहला रहे हैं। कुम्भ तो संतों का, योगियों का एक प्रयास था, यह तो योगियों का आशीर्वाद है कि उसमें योगी आते हैं, दर्शन देते हैं, ऋषि-मुनि आते हैं, दर्शन देते हैं और चले जाते हैं। त्रिवेणी के संगम में जोत बनकर के दिव्य पुरुष आते हैं और स्नान करके चले जाते हैं; लेकिन उन्होंने अध्यात्म की शिक्षा को ग्रहण किया, उन्होंने भजन-सुमिरण किया, उन्होंने उस अध्यात्म को जाना, केवल सुना ही नहीं क्योंकि बिना जाने हम उनके नजदीक आ नहीं सकते हैं। इसीलिए संतों के लिए कहा कि वे

तो बहुत परमार्थी होते हैं। वे अपना भी कल्याण करते हैं और जनमानस का भी कल्याण करते हैं। सत्संग का यह प्रयास



है? देखिए, सत्संग कोई घुट्टी नहीं है जो आपको पिला दी जाएगी और आपका सारा रोग दूर हो जाएगा। यह तो हमें याद दिलाता है कि हम जितनी बार सांस ले रहे हैं, हमें उस परमात्मा को याद करना है। हमें उसका सुमिरण करना है। जब जन्म हुआ इस संसार में, तो हम क्या साथ लेकर के आए। जन्म हुआ है मनुष्य योनि में, यही तो भगवान की सबसे उत्तम योनि है; यह बड़े भाग्य से मिला है। चौरासी लाख योनियां भटकते-भटकते मनुष्य जन्म पाया है।

लख चौरासी भरमदिया,

मानुष जनम पायो।

कहे नानक नाम संभाल,

सो दिन नेड़े आयो॥

परमात्मा की कृपा से हमें यह मनुष्य योनि मिली है। यह मनुष्य चोला व्यर्थ गंवाने के लिए नहीं मिला है। हम जब नवयुवकों को देखते हैं कि वे अध्यात्म से

दूर होते जा रहे हैं, वे अपना क्या जीवन जी रहे हैं! मैं, जब आश्रम में आती हूँ और नवयुवकों को प्रसाद बांटते देखती हूँ, भोजन बनाते देखती हूँ, भोजन बांटते देखती हूँ, दर्शनों की लाइन लगाते हैं, सेवा करते हैं, प्यासे को पानी पिलाते हैं, वे ये सब सेवाएं करते हैं, तो कितना अच्छा लगता है। ये बच्चे आज अपनी जमीन तैयार कर रहे हैं, छोटे-छोटे बच्चे हैं, ये बच्चे अपने जीवन की आगे की स्थिति को सुधार रहे हैं। इनके माता-पिता इन्हें सत्संग में लेकर आए हैं,

ये उन्हीं की शिक्षा और संस्कार हैं, जो बच्चों में आ रहे हैं।

आजकल कुछ बच्चे चौराहे में क्या कर रहे हैं? आप सब जानते हैं। अध्यात्म हमें कभी गलत रास्ते पर नहीं चलाता। अध्यात्म हमें सही रास्ते पर चलाता है। सत्संग हमें जगाता है कि हे जीव! जाग, जाग सके तो जाग, फिर क्या जागेगा! जब कोई बीमार होता है, अस्पताल में भर्ती हो जाता है, तो नलियां लग जाती हैं, कष्ट में हो जाता है, वेंटीलेटर पर होता है। उनके कष्ट को देखा नहीं जा सकता। लेकिन जो भक्त होता है, वह शरीर से तो तंग हो रहा होता है, उसको पीड़ा हो रही होती है; लेकिन वह तो अध्यात्म की दुनिया में होता है। तब याद आता है कि हमने किसको कष्ट दिया, किसको दुःख दिया, किसको सुख दिया, कौन-सा सत्संग सुना, किन संतों की वाणी सुनी, जिन संतों की वाणी सुनकर हमारे अंदर

आनंद की अनुभूति होती है! जो हमारे अनादि काल से धर्म ग्रंथ हैं, हमारे शास्त्र हैं, उन्होंने हमेशा यही कहा कि समय के सद्पुरुष के पास जाओ। समय के ज्ञानी के पास जाओ, तत्त्वदर्शी महापुरुष के पास जाओ और उस तत्त्वज्ञान को जानने की प्रार्थना करो, तत्त्वज्ञान को मांगो, वही ज्ञान हमारे जीवन को बदल सकता है।

भोजन तो जानवर भी खाता है, वह सोता भी है, सब कुछ करता है। लेकिन, एक मनुष्य योनि ही ऐसी है, जिसमें हम भगवान की महिमा को, कृपा को, ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं। यहां सब भक्त एकत्र हुए हैं, उस आध्यात्मिक ज्ञान को जानने के लिए। अभी हेटोंडा, नेपाल कार्यक्रम में हजारों की संख्या में भक्त आए। एक भक्त हमें पहली बार मिले। वहां यह बात चली कि किस तरह हम लोग जीवन को सुधारते हैं, मनुष्य चोले को सुधारते हैं।

मनुष्य घोड़े को सिखाता है, घोड़ा मनुष्य को नहीं सिखा सकता; ऐसे ही सद्गुरु मानव को सिखाते हैं। यह जीव इस संसार में क्यों आया है? मनुष्य ने घोड़े को सिखा दिया, घोड़े को प्रशिक्षित कर दिया, वह सीधा चलता है, उसको देखकर डरता है, उसकी आज्ञा मानता है, सब कुछ करता है, पर बोल नहीं सकता। घोड़ा बोल नहीं सकता, वह अपने शिक्षक को रिस्पेक्ट दे सकता है, अपने एक्शन से दिखा सकता है आदर सत्कार, पर कह नहीं सकता है। पर, मनुष्य ऐसा है, जो महामानव बन सकता है, अध्यात्म के ज्ञान से। वही ज्ञान रूपी अंजन है, भगवान राम ने भिलनी को दिया। वही ज्ञान श्री कृष्ण ने युद्ध के मध्य में अर्जुन को दिया। कई बार हम सत्संग में सुनते हैं, लेकिन फिर भूल जाते हैं, पल्ला झाड़ा और चले गए, फिर सत्संग के शब्द भूल जाते हैं,

कथाएं भूल जाते हैं। जो हमारी आत्मा को प्रकाश देती हैं, हम उन बातों को भूल जाते हैं। लेकिन बार-बार सत्संग सुनने से वे शब्द याद आ जाते हैं। हां, हमने यह सत्संग में सुना था कि भिलनी का प्रेम क्या होता है? अर्जुन की भक्ति क्या है? युधिष्ठिर का त्याग क्या होता है? ये सब बातें हम सत्संग में सुनते हैं, तब हम उस सत्य को जानने के लिए उसकी खोज करते हैं। कुएं के पास बैठ जाओ और सोचो कि वह पानी मेरे मुंह में आ जाएगा, तो वह कभी आ नहीं सकता।

देखिए, सत्संग कोई घुट्टी नहीं है जो आपको पिला दी जाएगी और आपका सारा रोग दूर हो जाएगा। यह तो हमें याद दिलाता है कि हम जितनी बार सांस ले रहे हैं, हमें उस परमात्मा को याद करना है। हमें उसका सुमिरन करना है।

प्यास बुझाने के लिए हमें कुएं के पास जाना पड़ेगा, गंगा के पास जाना पड़ेगा, गंगा से हाथों में पानी लेना पड़ेगा; पीना पड़ेगा, तब हमारी प्यास बुझेगी! कितना प्रयास करना पड़ता है? और इतने बड़े भगवान का ज्ञान क्या चलते-फिरते मिल जाएगा? नहीं मिल सकता, हमें उसको जानने के लिए भी प्रयास करना पड़ेगा। सत्संग से हमारे जीवन में एक जिज्ञासा उत्पन्न होती है और जब जिज्ञासा उत्पन्न होती है, तो हम ढूँढते हैं। वह कौन है! सत्संग से हमें पता चलता है कि हमें किसको ढूँढना है, किसको हमें जानना है, तब हम उसकी राह में चलते हैं।

हम सब शास्त्रों की बातें सत्संग में सुनते हैं। दया, धर्म, अध्यात्म, सेवा का सुअवसर, यह सब जो प्रभु कृपा से हमें मिला है। यह सब हम अपने साथ ले जाते

हैं। आज जो सेवा हो रही है दरबार के द्वारा, उस सेवा का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। इस सेवा से असंख्य लोगों के स्वास्थ्य सुधर रहे हैं। छोटे-छोटे बच्चों के हार्ट बदले जा रहे हैं, कैसी- कैसी बीमारियां हैं संसार में, उनको ठीक किया जा रहा है; क्योंकि यह भी तो दवा के साथ एक दुआ है। देखिए, हम किताब पढ़ते हैं, तो थोड़ा-सा हमें याद रहता है; फिर हम समय के साथ भूल जाते हैं। पर, सत्संग एक ऐसा माध्यम है जो हमें उन शब्दों को बार-बार याद दिलाता रहता है। ऐसे ही संत-महापुरुष जानते हैं कि इस ज्ञान के अलावा इस संसार में और कुछ भी सार नहीं है। महापुरुष इस अध्यात्म ज्ञान का हमेशा से बोध कराते रहे हैं, वे हमेशा हर काल में रहते हैं। ऐसे ही ज्ञान भी हर काल में मानव हृदयों में जीवित रहता है। किन्तु सद्गुरु के बिना कोई भी उस हृदय स्थित ज्ञान को जान नहीं सकता है। इसलिए कहा है-

ज्ञान अंजन सतगुरु दिया,

अज्ञान अंधेर विनाश।

हरि कृपा ते संत भेटिया,

नानक मन प्रकाश।।

सतगुरु महाराज ज्ञान अंजन देते हैं, उस ज्ञान से हमारे हृदय का अन्धकार दूर हो जाता है। संत समझाते हैं कि भगवान का अवतार किसलिए होता है, वे अपना ज्ञान कराने के लिए ही संसार में आते हैं, उसी ज्ञान से भगवान की और हमें अपने वास्तविक स्वरूप की पहचान होती है। ज्ञान के माध्यम से ही हम भगवान को ढूँढ सकते हैं; और जब उसे जानकर भजन करेंगे, तो वही भजन की कमाई हमारे साथ जाएगी, वही असली दौलत है। यह सांसारिक दौलत तो यहीं छूट जाएगी। इसलिए साथ जाने वाली दौलत की कमाई करो।

FOR MEDITATION ONE NEEDS TO KNOW WHERE TO FOCUS ATTENTION

MATA SHRI RAJESHWARI DEVI

We are conducting satsang programs at many locations. There is a two-day program at Dakpathar (Dehradun) and then at many locations in Delhi.

Without the spiritual teaching shared by Saints, The earth would have been destroyed many times over

Scores of people gather to listen attentively to spiritual discourses given by Saints. People like to understand these teachings. Divine bliss is hidden within man, not outside. Life is limited and we must understand those important spiritual goals that are left to be accomplished. Saints say:

Now is the time to get up and work for evolution,

Nanak said that after death the opportunity is lost

All those who are born will die. But the worldly attractions are so strong that the man gets entangled and forgets that this is his temporary abode. Yaksha asked Dharamraj—What is the most surprising thing in this world? Dharamraj replied that man loses his

parents and children to death, yet he continues to think unabated about household chores only without making any preparations. This indeed



is most surprising.

Saints and Holy Scriptures have unanimously concluded, That love for Holy Name is the high reward for performing great noble deeds

Today, a woman came along with her son-in-law and said that it is with your great blessings that he joined us today for the spiritual program as usually he is not interested. I told her that some people are afraid that lessons from Saints may lead to inner transformations. But Saints

are here for helping others. If you look at our history, you'll see that sinners like Ratnakar, Angulimal and Ajamil were transformed by contact with Saints. Guru Nanak Ji says:

“My teacher shared the spiritual knowledge, It dispelled darkness and ignorance, With God’s blessings one meets Saints, Their teachings enlighten the heart.”

Saints come to this world to share their spiritual treasures but man does not understand this. Rich, poor and people from all forms of life come to me and I find they do not have inner happiness. We all work from morning to evening but do not feel satisfied.

This implies that our daily chores will not lead to inner joy. Saints say that man can find true happiness only through Holy Name. Many people believe in a single teacher. Our books tell us that Dattatreya had 24 teachers. He partook teachings from

each of them and finally met the teacher who shared Holy Name with him and his thirst for knowledge got quenched. The word for teacher is Guru, 'Gu' means darkness and 'Ru' means light. So Guru is one whose teachings dispel darkness or ignorance. One finds inner peace only through a wise Guru.

Many people say that they sit in meditation practice but they find it difficult to focus their minds. First you need to know what to concentrate or rest your mind on, and only then do you place it there. So one must first learn the objective and then focus the mind on it. One cannot see his reflection if the water is moving, similarly the mind cannot concentrate until it is trained. Peace and stillness allows mind to focus effectively. King Janak saw a dream. He dreamt that the enemies attacked and took over his kingdom and killed many people. King's sons also got captured. He dreamt that he escaped from the palace and ventured into the jungle to save himself. In a state of extreme hunger and thirst, he came across an old woman living in a small hut.

The King asked her for some food, the woman replied that she already ate and the

King can cook a rice and lentil mix for himself. The King then gathers wood and lights a fire. He prepares the food with great difficulty and finally puts the meal on a big leaf to eat. But suddenly two bulls appear from nowhere and are fighting with each other. They spoil the food prepared.

The King begins to cry and his hiccups wake him up. He is amazed at this dream and he questions whether in reality he is a king or a beggar (who begged the old woman for food). He calls his senior ministers and shared his dream with them, and asks them a simple question – whether his present reality of being a king is true or his dream reality of being a beggar is true? Not being at peace, the King spoke with many learned people but none was able to satisfy him. He then announces that he will award the kingdom to the person who satisfies his deep thirst for true knowledge.

We reach the final phase of our life without asking the purpose for it. Upon birth we knew nothing, not even who our father and mother are. We knew no language. In the final phase of our lives, the eyes get weak and blurry, the hair turn white, back gets curved and the skin turns loose. But we

still don't question the purpose of life. Wise teachers prod us to wake up from this slumber and search for the divine nectar hidden inside. On partaking it man becomes divine. But man loses his energies in worldly pleasures. To reach gold buried beneath, man has to put efforts and dig. Similarly, our wise teachers guide us to seek within our hearts. Lord Krishna tells Arjuna to turn his senses inwards like a tortoise who withdraws his limbs. But to do that one needs to know the technique as well.

King Janak spoke to many learned men but his doubts were not cleared. Anyone who could not satisfy King's questions was put in jail. One day, young boy Ashtavakra was playing with his friends. These kids teased Ashtavakra that his father is in jail and they wouldn't play with him. Ashtavakra came home crying and asked his mother about his father. She told him that his father was jailed by King Janak as he couldn't give detailed explanations to the King's questions. She also told him that not just the highest seat of the palace but also the entire kingdom would be awarded to the person who gives the correct answers, and that no one has yet satisfactorily answered the King's queries.

भगवत प्राप्ति ही है मानव जीवन का लक्ष्य

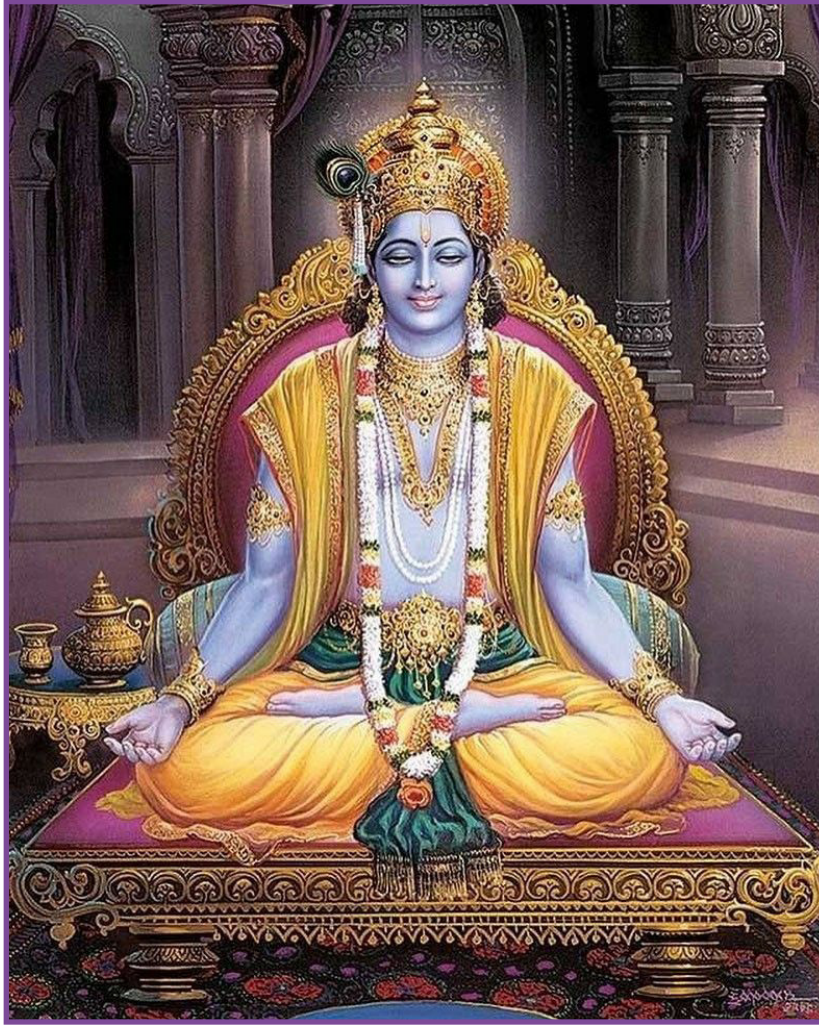
हमारे धर्मशास्त्र कहते हैं कि जीव को मानव शरीर भगवान की कृपा से प्राप्त होता है और इस योनी में उसे यह अवसर मिलता है कि वह अपने भविष्य का निर्माण करे। अपना हित-अनहित, स्वार्थ-हानि, उचित-अनुचित पहचानने एवं निर्णय करने की विवेक शक्ति भी मनुष्य को ही प्राप्त होती है, मनुष्येतर किसी अन्य-योनियों के जीवों को नहीं। हमारे वेद, पुराणों तथा धर्मग्रन्थों ने जीवनचर्या का विशद विवेचन किया है। जन्म से मृत्यु तक क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये, यह सविस्तार बताया गया है। यदि मनुष्य धर्म-शास्त्रों के कथनानुसार धर्म से युक्त अपना जीवन चलाता है, तो वह अपना कल्याण कर लक्ष्य प्राप्त करने में समर्थ होता है।

मानव जीवन का वास्तविक लक्ष्य है स्वयं का कल्याण करना। जीव का यथार्थ कल्याण है, जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होना। जीव अज्ञान के वश होकर

अनादि-काल से दुःखमय संसार-सागर में गोते लगाता है। नाना प्रकार की भली-बुरी योनियों में भटकता हुआ भाँति-भाँति के कष्ट सहता रहता है। भगवान उनकी दुर्दशा को देखकर उसे साधनोपयोगी देव-दुर्लभ मानुष शरीर प्रदान करते हैं और उसे सुअवसर देते हैं, जिससे यदि वह चाहे तो साधना के द्वारा एक ही जन्म में संसार-समुद्र से निकल कर सहज ही परमानन्दस्वरूप परमात्मा को प्राप्त कर ले। इसलिये मनुष्य

को चाहिये कि वह मानव-जीवन के दुर्लभ अवसर को व्यर्थ न जाने दे और राग-द्वेष, काम-क्रोध, लोभ-मोह आदि में फँसकर भाँति-भाँति के दुष्कर्म करने और शूकर-कूकर आदि योनियों में जाने का कारण न बने तथा अधोगति से बचे।

जब मनुष्य का लक्ष्य भगवान न होकर भोग हो जाता है, तब उसको बुद्धि तमसाच्छन्न हो जाती है, उससे वह कर्तव्य के



स्थान पर 'अधिकार' तथा त्याग के स्थान पर 'भोग' को अपना कर अर्थ और काम परायण हो जाता है। इसकी वजह से उसके सभी कार्य अनर्गल, अवैध तथा आसुरी भाव से सम्पन्न होते हैं। साथ ही वह भगवान तथा धर्म को न मानकर उच्छृंखल हो जाता है और अज्ञानयुक्त बुद्धि के कारण मनमाना आचरण करने लगता है। वह भगवान को मनुष्य के मस्तिष्क की उपज बताकर कर्म तथा सदाचार का खण्डन करने लगता है। इस प्रकार के आचरण से उसका चारित्रिक पतन होने लगता है। कहा

गया है कि पाप कर के दुःख से बचने की आशा रखना और सुख चाहना वैसा ही है, जैसा धधकती हुई आग में गिरा हुआ व्यक्ति न जलने और शान्ति पाने की आशा रखता है।

मनुष्य अपने स्वभाव और कर्मों में जितना ही अधिक सुधार कर लेगा, वह उतना ही उन्नत होगा; क्योंकि मनुष्य आप ही अपना मित्र और आप ही अपना शत्रु है। उन्नति एवं उत्थान का वास्तविक अर्थ है चरित्र का उत्थान तथा व्यवहार

आदि में विशुद्धि। जीवन को महान बनाने के लिये, ये तीन बातें आवश्यक हैं। यदि हम पाप करें और फलस्वरूप पुण्य चाहें, दूसरों को दुःख दें और स्वयं सुख चाहें या दूसरों की निन्दा करें और अपनी प्रशंसा चाहें; यह बिल्कुल उलटी बात है। बुरे कर्मों का फल तो बुरा ही होगा, अतः अच्छे कार्य करें। हमारे दुःखों का कारण यह है कि हम ईश्वरीय आदेशों के प्रतिकूल चलना पसन्द करते हैं, साथ ही जगत की मिथ्या वस्तुओं के माया-मोह में लिप्त हो जाते हैं। हम कल्याण की कामना तो करते हैं, लेकिन पाप-कर्मों से दूर नहीं हो पाते। श्रेष्ठ पुरुषों के जैसा बर्ताव चाहते हैं, लेकिन स्वयं नहीं करते। आज मनुष्य जाति का पतन धर्म की उपेक्षा से ही हुआ है। हमलोग प्रतिदिन अपने कर्मों की परीक्षा ही नहीं करते कि हमारे अन्दर पशुत्व कितना है और देवत्व कितना है? लोगों की ज्यों-ज्यों सांसारिक भोग और संग्रह में आसक्ति बढ़ती है, त्यों-ही-त्यों समाज में अधर्म बढ़ता है। पापाचार, कलह, विद्रोह आदि दोष बढ़ते हैं। इससे आज कथनी और करनी में, वाणी और हृदय में बहुत बड़ा अन्तर पड़ गया है।

वस्तुतः उन्नति तभी समझी जाती है, जब मनुष्य का मन केवल दैवीय सम्पत्तियों का निवास-स्थान बन जाये और सभी एक दूसरे का सुख तथा कल्याण चाहने लगें। घृणा और द्वेष के बदले प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में आत्मीयता और प्रेम आ जाये। स्वार्थ और अधिकार का त्याग तथा कर्तव्य को स्थान मिल जाये एवं क्रोध तथा हिंसा की जगह क्षमा और साधुता ग्रहण करने लगें। हम मानवों का कर्तव्य इन्द्रिय-जन्य वासना की मृग-मरीचिका से पृथक हो करके सच्चिदानन्द भगवान की प्राप्ति ही होना चाहिये। ईश्वर प्राप्ति ही जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति है। ईश्वर की प्राप्ति ही परम शान्ति और अविरल आनन्दमयी प्राप्ति है। प्रभु-कृपा के बिना कहाँ सुख है! कहाँ शान्ति है! सुविचार, सुप्रवृत्ति या परनिवृत्ति सब कुछ प्रभु कृपा साध्य है। जन्म-जन्मान्तरों, युग-युगान्तरों से कल्प-कल्पान्तरों तक भी विषयों के भोग से कभी शान्ति नहीं होती। हमारा कल्याण सर्वाधार, अशरण-शरण, अकारण-करुणा-वरुणालय प्रभु का सहारा लेने से ही सम्भव है। जीवन में भगवान का आविर्भाव और उनकी प्रतिष्ठा, यही हमारा लक्ष्य होना चाहिये। जो क्षोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु के चरण कमल से ही संभव है। इसलिए ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु शरण ग्रहण कर उनकी सेवा सुश्रुषा से उनकी आत्मा को प्रसन्न कर परमात्मा का तत्त्वतः बोध प्राप्त करना चाहिए, तभी सही मायने में मानव जीवन के एकमेव उद्देश्य भगवत प्राप्ति संभव होगा। ■

चार प्रकार के पुत्र

भारतीय संस्कृति और धर्मशास्त्रानुसार चार प्रकार के पुत्र या संतान होते हैं; जिनका विवरण निम्नवत है। जैसे कि-

ऋणानुबन्धपुत्रोऽथ, उदासीनश्च शत्रुवत।

सेवकश्चेति विज्ञेयाः, चत्वारः पुत्रसंज्ञकाः॥

1- ऋणानुबन्ध पुत्र- ये वे पुत्र होते हैं, जो पिछले जन्म के किसी ऋण को चुकाने या वसूलने के लिए पैदा होते हैं। यदि पुत्र ने आपसे पिछले जन्म में कुछ लिया था, तो वह इस जन्म में सेवा करके उसे चुकाएगा। इसके विपरीत, यदि आपने उससे कुछ लिया था, तो वह आपके धन और सुख को नष्ट कर सकता है।

2- शत्रु पुत्र:- पिछले जन्म में किसी को दुःख पहुँचाने वाला व्यक्ति इस जन्म में पुत्र बनकर आता है; और बदला लेने के लिए माता-पिता को कष्ट देता है।

3- उदासीन पुत्र:- इस श्रेणी के पुत्र न तो माता-पिता को विशेष कष्ट देते हैं और न ही उनकी कोई सेवा करते हैं। शादी के बाद या आत्मनिर्भर होने पर वे अपनी अलग दुनिया में व्यस्त हो जाते हैं और माता-पिता के प्रति तटस्थ रहते हैं।

4- सेवक पुत्र :- यह सर्वश्रेष्ठ श्रेणी है। ऐसा पुत्र माता-पिता की आज्ञा का पालन करता है, उनकी सेवा करता है और कुल का नाम रोशन करता है। धार्मिक ग्रंथों में इसे ही “पुत्र” के वास्तविक धर्म का पालन करने वाला माना गया है। ■

मानव जीवन उपयोगी नीति विचार

विद्या का अभ्यास न करने से वह विनष्ट हो जाती है। शक्ति रहते हुए फटे-पुराने, मैले-कुचैले वस्त्रों को धारण करने वाली स्त्रियाँ सौभाग्य की रक्षा नहीं कर पातीं, सुपाच्य भोजन से रोग नष्ट हो जाता है और चातुर्यपूर्ण नीति से शत्रु का विनाश हो जाता है। आपत्तिकाल के लिए धन का संरक्षण करना चाहिए, स्त्रियों की रक्षा के लिए धन का उपयोग करना चाहिए। कुल की रक्षा के लिए एक व्यक्ति का, ग्राम की रक्षा के लिए कुल का, जनपद के हित के लिए ग्राम का और अपने वास्तविक कल्याण के लिए पृथ्वी का भी परित्याग कर देना चाहिए।

त्यजेदेकं कुलस्यार्थं ग्रामस्यार्थं कुलं त्यजेत्।

ग्रामं जनपदस्यार्थं आत्मार्थं पृथिवीं त्यजेत्॥

नरक में निवास करना अच्छा है, किन्तु दुश्चरित्र व्यक्ति के घर में निवास करना उचित नहीं है। नरकवास के कारण पाप विनष्ट हो जाता है, किन्तु दुश्चरित्र व्यक्ति के घर में निवास करने से पाप की निवृत्ति नहीं होती। बुद्धिमान पुरुष एक पांव को स्थिर करके ही दूसरे पांव को आगे बढ़ाता है। इसीलिए अगले स्थान की परीक्षा के बिना पूर्व स्थान का परित्याग नहीं करना चाहिए। दुष्टजनों से व्याप्त देश, उपद्रव-ग्रस्त निवास भूमि, कृपण- राजा तथा मायावी- मित्र का परित्याग कर देना चाहिए। कंजूस के हाथ में पहुँचे धन, अत्यन्त दुष्ट और आग्रही व्यक्ति के पास संचित ज्ञान, गुण एवं पराक्रम से रहित रूप तथा आपत्ति काल में परांगमुख मित्र से मनुष्य को क्या लाभ हो सकता है? जो पदासीन व्यक्ति है, उसके कभी न देखे गए बहुत-से व्यक्ति भी सहायक हो जाते हैं और सभी व्यक्ति मित्र हो जाते हैं, परन्तु जब वही व्यक्ति पदच्युत और अर्थहीन हो जाता है, तो उसके असमय में स्वजन भी शत्रु हो जाते हैं। आपात्काल में मित्र, युद्ध में वीर, एकान्त में शुचिता, विभव के क्षीण हो जाने पर पत्नी तथा दुर्भिक्ष के समय अतिथि

प्रियता की पहचान होती है।

आपत्सु मित्रं जानीयाद्रणे शूरं रहः शुचिम्।

भार्या च विभवे क्षीणे दुर्भिक्षे च प्रियातिथिम्॥

पक्षीगण फलरहित वृक्षों का परित्याग कर देते हैं। सारस पक्षी सूखे हुए सरोवर को छोड़कर अन्यत्र चले जाते हैं। वैश्याएं धन से रहित होने पर पुरुष को छोड़ देती हैं। मन्त्री भ्रष्ट राजा का त्याग कर देते हैं। भौरे बासी पुष्प को त्याग कर नवविकसित कुसुम पर चले जाते हैं और मृग



जले हुए वन का परित्याग कर अन्यत्र आश्रय लेते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि स्वार्थवश ही सभी प्राणी एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। वास्तव में कौन किसका प्रिय है?

अर्थ प्रदान के द्वारा लोभी मनुष्य को, प्रशंसा करने से मूर्ख व्यक्ति को और तात्त्विक चर्चा से विद्वान पुरुष को संतुष्ट किया जा सकता है। सद्भाव रखने से देवगण, सज्जनवृन्द एवं द्विजाति संतुष्ट होते हैं। इनके अतिरिक्त साधारण लोग खान-पान तथा पण्डितजन मान-सम्मान से संतुष्ट हो जाते हैं। प्रणिपात निवेदन से उत्तम प्रकृति वाले सज्जन पुरुष को, भेद-नीति से धूर्त तथा अपनी अपेक्षा कम पराक्रम वाले व्यक्ति को थोड़ा-बहुत धन देकर और अपने समान पराक्रम वाले को अपनी अपेक्षा के अनुकूल धन देकर वश में किया जा सकता है। जिसका जैसा स्वभाव हो, उसके अनुरूप वैसा ही प्रिय वचन बोलते हुए उसके हृदय में प्रवेश कर चतुर व्यक्ति को यथाशीघ्र उसे अपना बना लेना चाहिए। नदी, नख तथा सींग धारण करने वाले पशु, हाथ में शस्त्र धारण किए हुए पुरुष, स्त्री और राजपरिवार विश्वास करने योग्य नहीं होते। जो मनुष्य बुद्धिमान है, उसको अपनी धन-क्षति, मन-संताप, घर में हुए दुश्चरित्र, धोखा तथा अपमान की घटना को दूसरे के समक्ष प्रकाशित नहीं करना चाहिए। नीच और दुर्जन व्यक्ति का

सान्निध्य, अत्यन्त विरह तथा सम्मान, दूसरे के प्रति स्नेह एवं दूसरे के घर में निवास- ये सभी नारी के उत्तम शील को नष्ट करने वाले हैं। किसके कुल में दोष नहीं है, रोग से कौन पीड़ित नहीं है, कौन दुःखी नहीं है और किसकी धन-सम्पत्तियाँ सदैव विद्यमान रही हैं? इस पृथ्वी पर धन प्राप्त कर कौन अहंकार भरा नहीं है, किस पर विपत्तियाँ आयी नहीं हैं, स्त्रियों के द्वारा किसका मन क्षुब्ध नहीं किया गया है और राजाओं का कौन प्रिय रहा है? कौन काल कवलित नहीं हुआ है, किस याचक का स्वाभिमान नष्ट नहीं हुआ है, कौन दुर्जनों के जाल में फँसकर कुशल पूर्वक जीवनयापन कर सकता है। जिस मनुष्य के मित्र, स्वजन, बन्धु-बान्धव नहीं हैं, जिसके पास अपनी बुद्धि नहीं है, वह कैसे अपने जीवन में सफल हो सकता है और जिस कर्म के सम्पन्न होने पर भी फल का उदय नहीं दीख रहा है, उस कर्म के अनुष्ठान से क्या लाभ? ऐसे ही जो सम्पत्ति परिणाम में बहुत बड़ा दुःख देने वाली है, उसका संग्रह कौन बुद्धिमान व्यक्ति करेगा?

जिस देश में व्यक्ति को सम्मान न मिले, आदर भी न मिले, अपने बन्धु-बान्धव भी सुलभ न हों और विद्या-लाभ की भी सम्भावना न बनती हो, उस देश का परित्याग कर देना चाहिए। जिस धन के लिए राजा और चोर से भय नहीं है, जो धन मरने पर भी मनुष्य का साथ नहीं छोड़ता, उस धन का उपार्जन करना चाहिए। प्राणों को भी संकट में डाल देने वाले परिश्रम से जिस धन का अर्जन किया जाता है, उस धन को तो उत्तराधिकारी लोग यथोचित विभाग के साथ अपने काम में ले लेते हैं, परन्तु प्राणों को संकट में डालकर धनार्जन के लिए परिश्रम करने वाला व्यक्ति धन के लोभ में जिन पापों को करता है, वे पाप ही उसकी धरोहर बनकर उसकी नरक-यातना के अथवा कुत्सित योनि के कारण बनते हैं। संचित किया हुआ तथा बार-बार विचार करके सुरक्षित रखा हुआ, कृपण का धन चूहे के द्वारा एकत्रित किए गए धन के तुल्य है। ऐसा धन दुःख देने के लिए ही होता है। उपार्जनकर्ता को उससे कोई भी सुख प्राप्त नहीं होता। ऐसा व्यक्ति मात्र धनार्जन का कष्ट ही भोगता है। ऐसे ही व्यक्ति जन्म-जन्मान्तर में दरिद्र होने के कारण नग्न होकर अनेक प्रकार के व्यसन से त्रस्त हो रूखे स्वभाव वाले हो जाते हैं तथा हाथ में खप्पर लेकर घर-घर में भीख माँगते हैं और यह लोगों को बताते हैं कि दान न देने वाले को ऐसा ही फल मिलता है। ऐसे भिक्षुक को कुछ दीजिए, कुछ दीजिए- ऐसी बार-बार याचना करते हुए संसार को यह शिक्षा प्रदान करते हैं कि दान न देने वाले मनुष्य की यही दशा होती है। आपकी भी मेरी-जैसी दुर्दशा न हो, इसलिए आपको दान देना चाहिए। कृपण अपने द्वारा संचित धन यज्ञों में नहीं लगा पाता है और अपने द्वारा

माँगकर इकट्ठा किए धन को गुणवानों को भी नहीं देता है। इस प्रकार का कृपण के द्वारा सुरक्षित धन चोर और राजा के काम में ही आता है। कृपण का धन देवता, ब्राह्मण, बन्धु तथा आत्महित के लिए नहीं होता, वह तो अग्नि, चोर अथवा राजा के लिए होता है। अत्यन्त कष्ट से अर्जित किया गया धन अथवा शत्रु को साष्टांग प्रणाम करके और उसकी अधीनता स्वीकार करके प्राप्त किया गया धन- इस प्रकार का धन तुझे कभी प्राप्त न हो।

चोर का वध ही उसका दण्ड है। दुष्ट मित्र के लिए समुचित दण्ड उसके साथ अल्प वार्तालाप करना है। स्त्रियों का दण्ड उनसे पृथक् शैया पर शयन करना तथा ब्राह्मण के लिए दण्ड निमन्त्रण न देना है। अपने विहित कर्म तथा धर्माचरण का पालन करते हुए जीविकोपार्जन में तत्पर, सदैव शास्त्र-चिन्तन में रह कर तथा अपनी स्त्री में अनुरक्त, जितेन्द्रिय और अतिथि सेवा में निरत श्रेष्ठ पुरुषों को तो घर में भी मोक्ष प्राप्त हो जाता है। विद्यार्जन, अर्थ-संग्रह, पर्वतारोहण, अभीष्ट-सिद्धि तथा धर्माचरण- इन पाँचों को धीरे-धीरे प्राप्त करना चाहिए। देवपूजनादिक कर्म, ब्राह्मण को दान, गुणवती विद्या का संग्रहण तथा सन्मित्र- ये सदा सहायक होते हैं। जो बाल्यावस्था में विद्याध्ययन नहीं करते हैं फिर युवावस्था में कामातुर होकर यौवन तथा धन को नष्ट कर देते हैं, वे वृद्धावस्था में चिन्ता से जलते हुए शिशिर काम में कुहरे से झुलसने वाले कमल के समान संतप्त जीवन व्यतीत करते हैं। शुष्क तर्क स्वयं में अप्रतिष्ठित है। अतः किसी सिद्धान्त की स्थापना केवल तर्क के द्वारा नहीं हो सकती। श्रुतियाँ भी अनेक प्रकार की हैं। ऐसा कोई भी ऋषि नहीं है जो भिन्न-भिन्न प्रसंगों में विभिन्न सिद्धान्तों का निर्देश न करे। इसीलिए धर्म का तत्व न तर्कों में निहित है, न श्रुतियों में निहित है, अपितु आप्तों की प्रज्ञा में निहित है। फलतः शिष्ट लोग जिस मार्ग का अनुसरण करते हैं, उसी मार्ग को अपना धर्म समझना चाहिए।

शिष्ट-व्यक्ति, अभीष्ट-सिद्धि, प्रियवचन, सुख, पुत्र, जीवन और देवगुरु से प्राप्त आशीर्वचन से मनुष्य की इच्छाएं परिपूर्ण नहीं होतीं, इनके लिए अभिलाषा बढ़ती ही रहती है। धन के संग्रह से राजा, नदियों की जलराशि से समुद्र, सम्भाषण से विद्वान एवं राजदर्शन से प्रजा के नेत्र संतुष्ट नहीं हो पाते। आकार, संकेत, गति, चेष्टा, वाणी, नेत्र और मुख की भाव-भंगिमा से प्राणी के अन्तःकरण में छिपा हुआ भाव प्रकट होता रहता है। विद्वान वह है, जो दूसरे के द्वारा अकथित विषय को भी जान लेता है। बुद्धि वह है, जो दूसरों के संकेत मात्र से भी वास्तविकता को समझ ले। कथित शब्द का अर्थ तो पशु भी जान लेते हैं। मनुष्य के दिखाए गए मार्ग का अनुसरण तो हाथी और घोड़ा भी करते हैं। ■

एक बार गुरु नानक देव जी और उनके शिष्य मरदाना किसी गांव में गए। वहां रहने वाले एक गरीब किसान लालू ने उन लोगों को अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित किया। गुरु नानक देव जी और उनके शिष्य मरदाना जब उसके घर भोजन करने पहुंचे, तो उस किसान ने भोजन के दौरान अपने सामर्थ्य के अनुसार रोटी और साग

परोसा। लेकिन जैसे ही गुरु नानक देव जी और उनके शिष्य भोजन शुरू करने वाले थे, उसी समय गांव के जमींदार मलिक भागु का सेवक वहां आया और कहने लगा कि आप दोनों को मेरे मालिक ने भोजन के लिए आमंत्रित किया है। वह चलने के लिए दोनों से बार-बार मिन्नत करने लगा। ये देख कर गुरु नानक जी लालू की रोटी अपने साथ लेकर, मरदाना के साथ जमींदार के घर चले गए। गुरु नानक जी के पहुंचते ही जमींदार मलिक भागु ने उनका खूब आदर सत्कार किया और भोजन परोसने की शुरुआत की। भोजन के दौरान जमींदार ने दोनों के सामने कई तरह के पकवान परोसे, लेकिन दोनों ने भोजन करने की शुरुआत नहीं की। इस पर जमींदार ने गुरु नानक जी से पूछा कि आप मेरे निमंत्रण पर आने में इतना संकोच क्यों कर रहे थे और अब भोजन करने में संकोच कर रहे हैं। उस गरीब किसान की सूखी रोटी में ऐसा क्या स्वाद है, जो मेरे पकवान में नहीं?

जमींदार की ये बात सुनकर गुरु नानक देव जी पहले कुछ नहीं बोले। फिर उन्होंने एक हाथ में उस रोटी को उठाया जो वह किसान के घर से लाये थे और दूसरे हाथ में जमींदार की रोटी को उठाया। इसके बाद उन्होंने अपने हाथों में ली हुई दोनों रोटी को दबाया। तभी किसान लालू की रोटी से दूध की धार बहने लगी और जमींदार मलिक भागु की रोटी से रक्त की धार बह निकली। इसको देखकर गुरु

नानक देव जी बोले, लालू किसान के घर की सूखी रोटी में प्रेम और ईमानदारी मिली हुई है। लेकिन तुम्हारी रोटी में अप्रमाणिकता से कमाया हुआ धन और मासूम लोगों का रक्त मिला हुआ है। इस बात का प्रमाण सामने है। इसी वजह से मैं लालू किसान के घर भोजन करना चाह रहा था। गुरु नानक देव जी की यह बात सुनकर जमींदार उनके पैरों में गिर गया और बुरे कर्म त्याग कर अच्छा इन्सान बनने की राह पर चल पड़ा।

इस प्रेरक प्रसंग से यह सीख मिलती है कि ईमानदारी से कमाई हुई एक रोटी हजार तरह के पकवान से भी ज्यादा इज्जतदार, महत्वपूर्ण और स्वादिष्ट होती है। साथ ही यह प्रसंग इस बात के लिए प्रेरित करता है कि इंसान किसी भी पद और प्रतिष्ठा पर क्यों न हो, ईमानदार व्यक्ति को ही समाज में इज्जत मिलती है। इसलिए हमेशा ईमानदार बनकर ही रहना चाहिए। ■

ईमानदारी की रोटी

ध्यान का वादा करके सजन तैनें

ध्यान का वादा करके सजन तैनें, ध्यान लगाना छोड़ दिया॥ टेक॥

शीश तले पग ऊपर थे जब माता के पेट में लेट रहा।

तब ईश्वर से इकरार किया तैनें, भूलके वह सब तोड़ दिया।

ध्यान का वादा करके सजन तैनें, ध्यान लगाना छोड़ दिया॥ 1॥

देख लुभाय गया जगकी सब रचना सुन्दर साज बनी।

उस सर्जनहार की सार नहीं तैनें, भोगन में मन को जोड़ दिया।

ध्यान का वादा करके सजन तैनें, ध्यान लगाना छोड़ दिया॥ 2॥

घर काजन बीच फंसाय रहा, दिन रात न मौत की याद रही।

उमरा सब बीतत जाय चली तैनें, क्यों प्रभु से मुख मोड़ दिया।

ध्यान का वादा करके सजन तैनें, ध्यान लगाना छोड़ दिया॥ 3॥

बारहि बार फिरा जग भीतर, जीवन की सब जूनन में।

ब्रह्मानंद भज भगवंत नहीं, भवसागर ने सिर बोड़ दिया॥

ध्यान का वादा करके सजन तैनें, ध्यान लगाना छोड़ दिया॥ 4॥

बैतूल के जनकल्याण समारोह में उमड़ा श्रद्धालुओं का अपार सागर

नशा से दूर रहें युवा, तभी परिवार, समाज और भारत का भविष्य मंगलमय होगा! -माताश्री मंगला जी

बैतूल मध्य प्रदेश। सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों की सुरम्य वादियों में बसा प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण, आदि गंगा सूर्यपुत्री पुण्य सलिला मां ताप्ती का उद्गम स्थल, अखण्ड भारत का केन्द्र बिन्दु, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र की सीमा

जी के सानिध्य में विशाल जनकल्याण समारोह आयोजित किया गया। इस दिन मौसम सुबह से ही खुशनुमा बन गया था, मानो प्रकृति ने दिव्य विभूतियों के स्वागत हेतु मेघरूपी छत्र लगा दिए हों, जिससे वातावरण में शीतलता आ गई

चढ़ा था कि क्या बच्चा, क्या बूढ़ा और क्या युवा, सभी अपनी-अपनी क्षमताओं से बढ़कर अपना दायित्व समझकर सेवा कार्य में संलग्न होने लगे थे।

इस विशाल जनकल्याण समारोह की तैयारियां एक महीना पहले ही आरंभ



बैतूल में आयोजित जनकल्याण समारोह को सम्बोधित करते हुए परमाराध्या माताश्री मंगला जी एवं साथ में विराजमान परमपूज्य श्री भोले जी महाराज

पर स्थित होने के कारण दोनों ही राज्यों की सभ्यता, संस्कृति व परंपरा का संगम है बैतूल जिला। इन्हीं सुरम्य वादियों के आंचल में 27 फरवरी, 2026 शुक्रवार का दिन चिरस्मरणीय और इतिहास बन गया, जब यहाँ परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं परमाराध्या माताश्री मंगला

और सभी के हृदय ताजगी और स्फूर्ति से प्रफुल्लित हो उठे थे। सांवरिया लॉन, तितली चौक, बड़ोरा, बैतूल में 27 फरवरी को आयोजित जनकल्याण समारोह में 26 फरवरी से ही भक्तों, सेवकों और श्रद्धालुओं का आगमन शुरू हो गया था। सभी पर सेवा का रंग ऐसा

कर दी गई थीं। महात्मागण, बाईगण, प्रचारकगण, कार्यकर्ता तथा श्री हंसलोक सेवक/सेविकाएं गांव-गांव घर-घर घूम-घूमकर एक-एक प्रेमीभक्त और श्रद्धालु को कार्यक्रम का निमंत्रण देकर उन्हें समारोह में पधारने के लिए अनुरोध कर रहे थे। जगह-जगह जनसंपर्क

अभियान और सत्संग कार्यक्रमों के आयोजनों के माध्यम से बैतूल जिला के साथ-साथ आसपास के कई जिलों में प्रचार की धूम मची हुई थी। इस तरह जनकल्याण समारोह के दिन यानि 27 फरवरी की सुबह से ही विभिन्न क्षेत्रों से प्रेमीभक्तों एवं श्रद्धालुओं के समूहों का आना प्रारंभ हो गया, सभी प्रवेश पत्र कार्यालय से कार्ड बनवाकर कार्यक्रम में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने लगे। जहां मुख्य प्रवेश द्वार पर एक ओर प्रवेश पत्र कार्यालय था, वहीं दूसरी ओर आयुष विभाग जिला अस्पताल, बैतूल के



बैतूल में आयोजित जनकल्याण समारोह में उपस्थित प्रेमी-भक्तगण

5 चिकित्सक, 5 पैरामेडिकल स्टाफ सहित 22 सदस्यों की टीम द्वारा चिकित्सा शिविर लगाया गया था, जो सुबह से शाम तक अनवरत अपनी सेवाएं प्रदान करते रहे। साथ ही संस्था का बुक स्टॉल भी लगा हुआ था, जहाँ से लोग आध्यात्मिक पुस्तकों की खरीद के साथ विभिन्न आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का भी समाधान कर रहे थे। मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही दाईं ओर समारोह के लिए विशाल पण्डाल था तथा बाईं ओर विशाल भंडारे का आयोजन किया गया था, जहाँ सुबह से ही जलपान और अल्पाहार के बाद प्रातः 10 बजे

से ही भोजन प्रसाद की परोसना शुरू कर दिया गया था। जो भी प्रेमीभक्त, श्रद्धालु, जनप्रतिनिधि व जनमानस समारोह हेतु आ रहे थे, भोजन प्रसाद ग्रहण कर पंडाल में अपना स्थान ग्रहण कर शांतिपूर्वक बैठते जा रहे थे।

इस तरह वह शुभ बेला भी आ गई, जब जनकल्याण समारोह की शुरुआत आगरा से पधारे भजन गायक सत्यवान

हरिप्रियाबाई जी ने अपने गुरु महिमा से परिपूर्ण सत्संग विचारों से उपस्थित जनमुदाय को गुरु और अध्यात्म ज्ञान की महिमा से परिचित कराया। संपूर्ण पंडाल प्रेमीभक्तों, श्रद्धालुओं एवं जिज्ञासुओं के अपार समूह से भर चुका था, जो बिना किसी शोर-शराबे के एकदम शांतिपूर्ण तरीके से बैठकर महात्मागण के सत्संग प्रवचन का आनंद ले रहे थे। अब समय

था परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के आगमन का, जिनका स्वागत सौभाग्यवती महिलाओं द्वारा एक समान पीत वस्त्र धारण कर वाला चुनरी ओढ़ कर

सिंह द्वारा मंगलाचरण गायन “गुरुदेव शरणं गुरुदेवं नमामि” से की गई। इसके बाद संतोष प्रजापति ने “गुरु चरण कमल बलिहारी रे।” भजन गाया। साथ ही अन्य भजन गायकों द्वारा चेतावनी, अध्यात्म ज्ञान, प्रभु महिमा और गुरु महिमा से परिपूर्ण भजनों की प्रस्तुति की गई, जिन्होंने श्रोताओं की सुषुप्त चेतना को जागृत कर भक्ति की मस्ती में डूबने पर मजबूर दिया। तत्पश्चात अयोध्या धाम से पधारे संस्था के प्रचारक श्री मंगल भाई ने अपने सत्संग विचारों से लोगों को प्रेरित किया। इसके बाद संस्था की वरिष्ठ महात्मा

सिर पर मंगल कलश लेकर मार्ग के दोनों ओर पंक्तिबद्ध रूप से खड़े होकर किया। संस्था के प्रचारक श्री जगदीश भाई के भजन “गुरु सम दाता जग में कोई नहीं।” की प्रस्तुति के सुअवसर पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं परमाराध्या माताश्री मंगला जी का मंच पर शुभागमन हुआ। माता जी, महाराज जी के मंच पर पहुँचते ही संपूर्ण पंडाल उनके जयकारों की ध्वनि से गूँज उठा। बैतूल क्षेत्र के प्रचारक महात्मा श्री शिवकृपानंद जी एवं श्री जगदीश दवंडे ने पुष्पहार पहनाकर उनका भावपूर्ण स्वागत किया। इसके बाद कन्यादान

महोत्सव समिति भैंसदेही, जिनको प्रतिवर्ष सामूहिक विवाह हेतु “हंस कल्चरल सेंटर” की ओर से आर्थिक

और वस्त्रादि की सहायता की जाती है, द्वारा छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा, सांवरिया लॉन परिवार द्वारा माँ ताप्ती का तैलचित्र, पूर्व विधायक एवं कांग्रेस के जिला अध्यक्ष श्री निलय डागा जी द्वारा शॉल उढ़ाकर, जिला अध्यक्ष भाजपा श्री सुधाकर पंवार व अन्य

गणमान्यजनों तथा विभिन्न संस्थाओं पदाधिकारियों द्वारा माताजी, महाराज जी का भव्य स्वागत व अभिनंदन किया गया। तत्पश्चात् महात्मा शिवकृपानंद जी का सत्संग हुआ जिसमें उन्होंने भावुक होकर माताजी, महाराज जी का बैतूल पधारने पर स्वागत, अभिनंदन और वंदन किया।

श्री माता जी व श्री महाराज जी

को मंच पर देखकर सभी प्रेमीभक्त भावविह्वल हो गए, खुशी के आंसुओं से उनकी आंखें नम हो गईं; क्योंकि वर्षों

जा सकते, जो शबरी के समान माताजी, महाराज जी के दर्शनों की राह तकते रहते थे, आज उनकी प्रतीक्षा तो पूर्ण हुई ही,

उनका जीवन भी दिव्य विभूतियों के दर्शन कर कृतार्थ हो गया। इसके बाद मंडला से पधारे श्री सत्यवान सूरदास जी ने एक भजन “रस गगन गुफा में अजर झरे” गाया, जिसे सुनकर संपूर्ण जनसमूह अध्यात्म ज्ञान के सागर में गोते लगाने लगा। तत्पश्चात् परमपूज्य श्री भोले जी महाराज ने अपनी दिव्य वाणी में “हंसा निकल गया पिंजरे से, खाली पड़ी रही तस्वीर”



बैतूल में आयोजित जनकल्याण समारोह के सुअवसर पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी का स्वागत करते हुए कन्यादान महोत्सव समिति भैंसदेही के पदाधिकारीगण



बैतूल में आयोजित जनकल्याण समारोह के सुअवसर पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी का स्वागत करते हुए सांवरिया लॉन बैतूल परिवार के सदस्यगण

और “मानुष जनम अनमोल रे, माटी में ना रोल रे, अब तो मिला है फिर न मिलेगा।” चेतावनी के भजन गाकर मानव जीवन के महत्व और संसार की निःसारता के प्रति जनसमूह को जाग्रत किया। इसके बाद परमाराध्या माताश्री मंगला जी का ओजस्वी मंगलमय प्रवचन हुआ। श्री माता जी ने उपस्थिति जनसमूह का आवाहन किया कि वे समय के सच्चे तत्वदर्शी महापुरुष सद्गुरु से आत्मज्ञान को जानकर भजन-सुमिरण कर

अपना मानव जीवन धन्य करें। उन्होंने कहा कि संसार में बहुत से ज्ञान और विद्याएं हैं, जिनका अपने-अपने स्थान पर महत्व है; किन्तु जिस ज्ञान से अपने निज स्वरूप का बोध होता है तथा जीव

जन्म - मरण के चक्र से मुक्त होता है, वह अध्यात्म ज्ञान है। इस अध्यात्म ज्ञान का बोध समय के श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु महाराज ही कराते हैं। माताश्री मंगला

होगा।

पंडाल में उपस्थित जनमानस ने शांति और सद्भाव का परिचय दिया और कार्यक्रम के समापन होने पर भी बिना किसी अव्यवस्था के शांतिपूर्ण ढंग से

कारणवश कार्यक्रम में नहीं पहुँच सके, वे बहुत ही पछता रहे थे। सच में यह दिन बैतूलवासियों के लिए वर्षों की तपस्या के पूर्ण होने जैसा गर्व से भरा हुआ था। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना था कि

यदि अवकाश वाले दिन कार्यक्रम का आयोजन किया जाता तो शायद जगह कम पड़ जाती और लोगों को बाहर खड़े होकर सुनना पड़ता। फिर भी हजारों प्रेमीभक्तों के साथ-साथ भारी संख्या में श्रद्धालु, जनप्रतिनिधि, गणमान्य जन, समाजसेवक, समाज सुधारकों ने समारोह में



बैतूल में आयोजित जनकल्याण समारोह के सुअवसर पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के स्वागत के लिए खड़ी सौभाग्यवती महिलाएं

जी ने मानव समाज का आवाहन किया कि वे अपने बच्चों को शुभ संस्कार दें। आज के युवा अनेक प्रकार के नशीले पदार्थों का सेवन कर उनसे ग्रसित हो चुके हैं। इन युवाओं को नशे से हटाकर अध्यात्म ज्ञान से जोड़ने की जरूरत है। जब नवपीढ़ी संस्कारवान, चरित्रवान,

दर्शनों की लाइन लगा ली। कोई भी प्रेमीभक्त बिना दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त करे, भंडारे में जाने को तैयार नहीं था। सभी को बहुत ही सहज और आनन्द के साथ दर्शनों का लाभ प्राप्त हुआ। तत्पश्चात भण्डारा प्रसाद ग्रहण किया। समारोह में उपस्थित समस्त जनसमूह

पधारकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई तथा सभी ने कार्यक्रम के आयोजन एवं व्यवस्था की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस जनकल्याण समारोह के आयोजन में बैतूल के सभी कार्यकर्ताओं, प्रचारकों, पुलिस, प्रशासन, जनप्रतिनिधियों, जनसेवकों आदि-आदि का सराहनीय योगदान रहा। स्थानीय सभी समाचार पत्रों में जनकल्याण समारोह की सूचना एवं सचित्र समाचार विस्तार से प्रकाशित किए गए। इस तरह बैतूल में आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह वहां के लोगों के लिए एक चिरस्मरणीय



बैतूल में आयोजित जनकल्याण समारोह के सुअवसर पर भण्डारे में भोजन प्रसाद ग्रहण करते हुए प्रेमी-भक्तगण

गुणवान और ज्ञानवान होंगे, तो परिवार, समाज और राष्ट्र का भविष्य मंगलमय

अपने आपको बहुत ही सौभाग्यशाली महसूस कर रहे थे। और जो किसी

संस्मरण बनकर रह गया है, जिसे पुनः-पुनः याद किया जाता रहेगा। ■

-: पत्रिका संबंधी सूचना :-

सभी आदरणीय महात्मा/बाईगण एवं प्रचारकों से निवेदन है कि आप अपने क्षेत्र में अध्यात्म-ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु **“हंसलोक संदेश”** पत्रिका को अधिक से अधिक प्रेमी-भक्तों एवं अध्यात्मज्ञान पिपासुओं तक पहुँचायें। पत्रिका के माध्यम से आपको हर माह परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के देशभर में आयोजित जनकल्याण समारोहों में दिए गए प्रवचनों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा। साथ ही समारोहों के सुन्दर चित्र और विस्तृत विवरण भी पढ़ने को मिलेगा। इसके अलावा संस्थागत आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं जनकल्याण से संबंधित गतिविधियों की सूचना व समाचार भी मिलेंगे। इसलिए प्रत्येक प्रेमी परिवार में नियमित रूप से पत्रिका अवश्य मंगाई जाए।

डाक से पत्रिका की सुलभ प्राप्ति के लिए गाँव/क्षेत्र के सभी प्रेमी भक्त एक साथ किसी एक प्रेमी-भक्त के नाम व पते पर पत्रिकाएं बंडल रूप में मंगवा सकते हैं।

नोट:- (1) हंसलोक संदेश पत्रिका की रसीद काटते समय रसीद पर पाठक का पैन नम्बर, आधार नम्बर तथा मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

(2) पत्रिका की एक रसीद (पर्ची) 100/- रुपये से अधिक की न काटी जाए।

(3) पत्रिका के लिए मनीआर्डर भेजते समय अपना पैन नम्बर, आधार नम्बर और मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

(4) यदि आप एक से अधिक पत्रिकाएं बंडल के रूप में मंगाना चाहते हैं तो मो.नं-9038675826 पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

एक प्रति मूल्य- रु.10/-

हंसलोक संदेश पत्रिका मंगाने का पता:-

कार्यालय - हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड, भाटी, छतरपुर,

नई दिल्ली-110074 संपर्क सूत्र- 8860671326

विशेष:- पत्रिका संबंधी अपने अमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराते रहें। आपके सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शन का कार्य करेंगे। -सम्पादक

अप्रैल, 2026 के पर्व-त्योहार

- 2 अप्रैल गुरुवार- पूर्णिमा, हनुमान जयंती □ 5 अप्रैल रविवार- राष्ट्रीय समुद्री दिवस □ 6 अप्रैल सोमवार- माताश्री राजेश्वरी देवी जयंती
- 7 अप्रैल मंगलवार- विश्व स्वास्थ्य दिवस □ 13 अप्रैल सोमवार- वरुथिनी एकादशी □ 14 अप्रैल मंगलवार-वैशाखी □ 17 अप्रैल शुक्रवार- वैशाख अमावस्या □ 19 अप्रैल रविवार- अक्षय तृतीया, परशुराम जयंती □ 22 अप्रैल बुधवार- पृथ्वी दिवस □ 28 अप्रैल मंगलवार- मोहिनी एकादशी



श्री हंस जयंती वर्ष 125 पर बैतूल में विशाल जनकल्याण समारोह

बैतूल, मध्य प्रदेश। परमपूज्य भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी की प्रेरणा से **श्री हंस जयंती वर्ष - 125** के पावन अवसर पर **27 फरवरी, 2026** को एक **विशाल जनकल्याण समारोह** का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मंडला, जांजगीर, चांपा मुल्ताई, राजगढ़, सिहोर, मुरैना तथा बैतूल सहित विभिन्न जिलों से हजारों प्रेमीभक्तों ने भाग लिया। इस अवसर पर माता श्री मंगला जी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए युवाओं को नशामुक्त रहने का संकल्प लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आध्यात्म के मार्ग पर चलकर ही मनुष्य अपने भीतर प्रेम, करुणा, मैत्रीभाव और सद्भावना जैसे मानवीय मूल्यों को स्थापित कर सकता है। उन्होंने युवाओं से अपने पूर्वजों द्वारा दिए गए श्रेष्ठ संस्कारों को सुरक्षित रखने और एक आदर्श समाज के निर्माण में योगदान देने का आग्रह किया। बैतूल पहुँचने पर माता जी व महाराज जी का भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र से पथारे भजन गायक कलाकारों ने सुंदर एवं प्रेरणादायक भजनों की प्रस्तुति दी। अंत में विशाल भंडारे के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ, जिसमें सभी श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।



आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।



MOB: 8800291788/ 8800291288



/hanslok